एक्ज़िमिअस : निर्यात लाभ

जून 2003

भारतीय निर्यात-आयात बैंक
हमसे *www.eximbankindia.com* पर संपर्क करें

तिमाही प्रकाशन

इस अंक में

- अद्यतन व्यवसाय अवसर : आने वाली परियोजनाएं 4
- सेवाओं संबंधी क्षेत्र की निर्यात संभावना 6
- अफ्रीकी विकास बैंक और अफ्रीकी निर्यात-आयात बैंक की 2002 में निष्पादन की प्रमुख विशेषाताएँ 7
- सफलता की कहानी : अल्काइल एमीन्स केमिकल्स लिमिटेड 8
- भारत में पूँजी खाते का उदारीकरण : अद्यतन गतिविधि 9
- विश्व व्यापार संगठन के अंतर्गत वर्तमान मुद्दे : एंटी डंपिंग 10
- तीव्र ध्यान संकेन्द्रण : युद्ध के बाद इराक में व्यवसाय के अवसर 16

अफ्रीकी महाद्वीप का आर्थिक सर्वेक्षण

अत्यधिक कर्ज़ से दबे गरीब देशों की पहल (एच आइ पी सी) के अंतर्गत सुदृढ़ व्यापक आर्थिक स्थिरता को प्रतिबिंबित करते हुए, सुरक्षा स्थितियों में सुधार तथा ऋण राहत से अफ्रीका ने हाल के वर्षों में आर्थिक गतिविधि में पुनरुत्थान दिखाया है। लेकिन कॅमोडिटी मूल्यों में दीर्घकालीन कमज़ोरी, सतत संघर्ष और राजनीतिक अस्थिरता तथा निम्नतर ओपेक उत्पादन कोटा से 2002 में अफ्रीकी आर्थिक गतिविधि नीचे थी। 2001 में 3.6% की तुलना में 2002 में स.दे.उ. 3.4% था। 2002 की दूसरी छमाही में खराब मौसम के कारण अफ्रीका के मुख्य भागों में, दक्षिण अफ्रीका और पश्चिमी सहेल में कृषि उत्पादन में कमी आई। इसके अलावा ज़िम्बाब्वे में लगातार उथल-पुथल तथा कोत दी वुआर में विद्रोह से इन अर्थव्यवस्थाओं तथा उनके पड़ोसियों (विशेषतया भूमिबद्ध देशों में जैसे माली, बुर्किना फासो तथा नाइजर) की अर्थव्यवस्थाओं की वृद्धि पर गंभीर प्रभाव पड़ा।

सतत नीति सुदृढ़ीकरण, वैश्विक सुधार तथा उच्चतर गैर ईंधन कॅमोडिटी मूल्यों के समर्थन से अफ्रीकी स.दे.उ. वृद्धि 2003 में 3.9% तक प्रक्षेपित की गई। लेकिन ये मौसम के मिजाज में शीघ्र सुधार तथा पश्चिम अफ्रीका में चिह्नित सुधार पर निर्भर होगा।

अफ्रीकी में व्यापक आर्थिक नीतियों में हाल के वर्षों में काफी सुधार हुआ है जो अधिकांश देशों में एक अंक की मुद्रास्फीति से प्रतिबिंबित होता है। इसके अलावा 1990 के मध्य से राजकोषीय घाटे में कमी भी आई है। अंगोला तथा ज़िम्बाब्वे इसके उल्लेखनीय अपवाद है जहाँ 2002 में मुद्रास्फीति की दर क्रमश: 108.9% तथा 140.0% थी। घाना, नाइजीरिया और कांगो गणतांत्रिक प्रजातंत्र में कुछ हद तक कम थी। सम्पूर्ण क्षेत्र में 2002 में मुद्रास्फीति 9.3% थी जो 2001 की तुलना में 13.0% और 2000 की तुलना में 14.3% कम थी।

अफ्रीकी से कुल निर्यात 1980 में 96 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 2002 में 139 बिलियन अमेरिकी डॉलर आंके गये जबकि इसी अवधि में अफ्रीका के आयात 80 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 133 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गए। व्यापार में वृद्धि के बावजूद 2002 में निर्यातों के मामले में वैश्विक व्यापार में अफ्रीका का हिस्सा 1980 में 5% से घटकर 2002 में 2.2 प्रतिशत तथा आयातों के मामले में 4% से घटकर 2% हो गया।

शताब्दी विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अफ्रीका के समक्ष मुख्य चुनौती गरीबी उन्मूलन है। अफ्रीकी प्रयासों के लिए अंतरराष्ट्रीय समुदाय से सहायता आवश्यक है जिसमें शामिल है उच्चतर सहायता, ऋण राहत और अधिक महत्त्वपूर्ण सुधरा हुआ बाज़ार सुलभता।

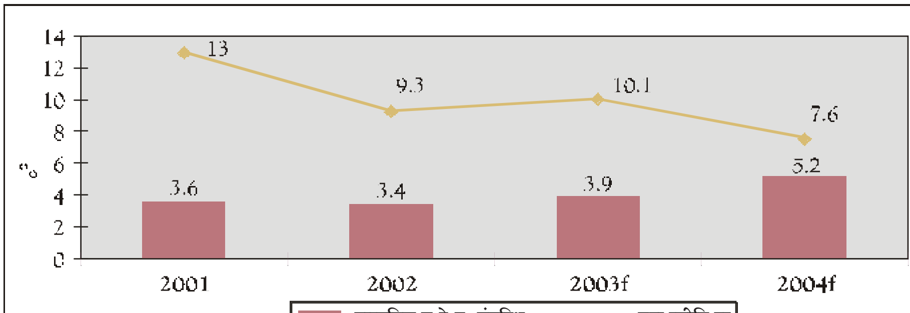

सुलभता स्रोत : अं मु को

हाल के विकास - क्षेत्रवार

कच्चे तेल के उत्पादन में अत्यधिक वृद्धि तथा निर्यातों में वृद्धि के कारण 2001 में 2.17% की वृद्धि के बाद 2002 में अल्जीरियाई अर्थव्यवस्था में 3.1% की वृद्धि हुई। कच्चे तेल के उत्पादन में हुए विस्तार के परिणामस्वरूप 2003 में वृद्धि दर 3.5% तक बढ़ने की आशा है। निर्यातों में परिणामी वृद्धि से कमज़ोर निर्माण उत्पादन के प्रभाव को ऑफसेट करने की आशा है। साथ ही निर्माण से वृद्धि भी होगी क्योंकि सरकार नाज़ुक राष्ट्रीय आवास कमी को पूरा कर रही है। वृद्धि घरेलू एवं विदेशी दोनों तरह के बढ़ते हुए निवेशों से भी चालित होगी। हाल के वर्षों में अल्जीरिया व्यापार के उदारीकरण में महत्त्वपूर्ण उन्नति हुई है। 2001 में सीमाशुल्क टैरिफ सुधार लागू होने के बाद यूरोपीय संघ के साथ 2002 में एक एसोसिएशन करार पर हस्ताक्षर किये गये। सीमा शुल्क टैरिफ सुधार तथा यू सं एसोसिएशन करार के अलावा अल्जीरिया ने विश्व व्यापार संगठन में प्रवेश के लिए आवदेन भी प्रस्तुत किया। इसके विरुद्ध सरकार के खर्च में कमी तथा लगातार कमज़ोर खपत वृद्धि के कारण मोरक्को में आर्थिक गतिविधि मंद पड़ गई जिससे 2001 में 6.5% वृद्धि की तुलना में 2002 में 4.5 की निम्नतर वृद्धि हुई। अच्छी बरसात से कृषि में विस्तार के साथ 2003 में वृद्धि 5.5% तक बढ़ने की आशा थी तथा भवन क्षेत्र में शक्तिशाली वृद्धि की आशा थी। तीसरे वर्ष सूखे से पीड़ित तथा उद्योग में मंद वृद्धि से पर्यटन और कृषि में मंदी से ट्यूनिशिया का स.दे.उ. 2001 में 5.2% की तुलना में 2002 में 1.9 हो गया। पर्यटन में मंदी अमेरिकी आक्रमण और खुद ट्यूनिशिया में आक्रमण के कारण थी। कमज़ोर घरेलू मांग से उद्योग में वृद्धि मंद पड़ गई। सर्दियों में भारी बरसात के बाद अच्छी फसल से 2003 में स.दे.उ. के 5% बढ़ने की आशा थी। हालांकि यूरोप में लगातार मंद वृद्धि से औद्योगिक निर्यात बाधित रहेंगे।

पश्चिम अफ्रीका, में पिछले 5 वर्षों में नाइजीरिया में अस्थायी स्तर पर व्यापक आर्थिक असंतुलन अत्यधिक बढ़ा है। उच्च तेल मूल्यों के बावजूद राजकोषीय घाटा अधिक बढ़ गया जिससे अल्पावधि के ऋण और सरकारी ऋणदाताओं को बाहरी बकाया पड़ गया। अत: वास्तविक स.दे.उ. वृद्धि 2002 में 0.5% की वृद्धि दर पंजीकृत हुई जबकि 2001 में 2.8% थी। यद्यपि जनवरी और फरवरी 2003 में ओपेक ने अपने तेल उत्पादन कोटे में विशेष रूप से ढील दी है जिससे नाइजीरिया के तेल उत्पादन को धक्का लगा। अतएव वास्तविक स.दे.उ. वृद्धि 2003 में 6.7% उच्च तक प्रक्षेपित की गई। कोत दिवुआर में 2002 के अंत में नागरी उपद्रव के साथ राजनीतिक अस्थिरता से आर्थिक गतिविधि घटी। सतत उपद्रव से कृषि प्रभावित हुई यद्यपि उत्साही कॉफी मूल्यों से इसे लाभ होगा। इस उपद्रव का सेवा और उद्योग क्षेत्र पर भी प्रभाव पड़ेगा। अतएव 2003 में वास्तविक स. दे. उ. के 2% तक कम होने की आशा है। इसके विपरीत अत्यधिक उत्पादन तथा सोने और कोकोआ के उच्च अंतरराष्ट्रीय मूल्यों के कारण घाना की अर्थव्यवस्था 2002 में 4.5% बढ़ी तथा 2003 में इसके 4.7% तक बढ़ने की आशा है।

पूर्व और केन्द्रीय अफ्रीका, में वर्ष के बीच में अनिश्चित बरसात, निवेशक का कमज़ोर पड़ता आत्मविश्वास, दाता समर्थन की कमी तथा चुनावों से जुड़ी अनिश्चितता से 2002 में केन्या की आर्थिक गतिविधि कमज़ोर पड़ गई। दूसरी और विश्व में काफी के बढ़ते दामों और अच्छी फसल के साथ निर्यात प्राप्तियों में वृद्धि से युगांडा में 2002 में 6.6 प्रतिशत की उच्च वृद्धि दर दर्ज हुई। लेकिन प्रतिकूल मौसम के कारण जिससे 2002 के अंत में खाद्य फसल नष्ट हो गई युगांडा की अर्थव्यवस्था 2003 में 5.7% के निम्नतर दर पर बढ़ने की आशा है। सूडान की स.दे.उ. वृद्धि जो 2002 में 5% की दर से बढ़ी उसके शक्तिशाली बने रहने की आशा है जो मेरो बांध परियोजना पर पूँजीगत खर्च शुरू हो गया है अत: 2003 में बिजली उद्योग में भी अत्यधिक विदेशी निवेश आने की आशा है। घरेलू निवेश और शक्तिशाली घरेलू मांग में भी वृद्धि हुई है जिसे 2003 में बने रहना चाहिए क्योंकि घरेलू अर्थव्यवस्था में हाल की उच्च तेल आय की आवक जारी थी। 2003 में प्रत्याशित सुधरी हुई फसल के साथ सूडान के मांस निर्यातों पर खाड़ी के अरब देशों द्वारा प्रतिबंध समाप्त करने से गैर तेल निर्यात बढ़ेंगे जो कुल निर्यातों का 22.7% है इससे घरेलू आय बढ़ेगी जिससे खपत बढ़ेगी। 2003 में समग्र वास्तविक वृद्धि 5.8% तक पहुँचने का अनुमान है। वित्तीय वर्ष 2001 में 7.7% की तुलना में इथियोपियाई अर्थव्यवस्था के वित्तीय वर्ष 2002 में 5% तक बढ़ने का अनुमान है (7 जुलाई को राजकोषीय वर्ष समाप्त होता है) जिससे 2002 में खराब फसल का होना प्रतिबिंबित होता है। मुख्य कृषि क्षेत्र में अनाज का उत्पादन 20-30% घट गया तथा 2001 की तुलना में 2002 में धान्य पैदावार 25% कम रही। आने वाले 30 महीनों में एच आई पी सी की ऋण राहत (खाद्य सहायता को छोड़कर 4 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक होने की संभावना) तथा फौज पर होने वाले खर्च में धीरे-धीरे होने वाली कमी से वृद्धि की संभावना में सुधार होगा लेकिन ये हरित क्रांति के पैमाने पर फीके पड़ जाएंगे। अतएव 2002-03 में वास्तविक स.दे.उ. के 2% तक कम होने की आशा है।

दक्षिण अफ्रीका में लगातार दूसरे वर्ष खराब फसल हुई। मलावी, ज़ाम्बिया और ज़िम्बाब्वे अत्यधिक प्रभावित थे। चूँकि उनकी अर्थव्यवस्थाओं में कृषि सबसे बड़ा हिस्सा होती है अतएव आय और खपत खर्च कम रहे। ये प्रभाव अत्यधिक स्थानीय थे। दक्षिण अफ्रीका में मक्के की ज़बरदस्त पैदावार हुई जिससे घरेलू खर्च को बल मिला। अतएव कमज़ोर वैश्विक मांग लेकिन सशक्त घरेलू मांग से 2002 में समग्र स. दे. उ. वृद्धि 3% थी तथा 2003 में इसके 2.8% तक नीचे रहने की आशा है।

तालिका : चयनित अफ्रीकी देशों में वास्तविक स.दे.उ. वृद्धि तथा मुद्रास्फीति

	वास्तविक स.दे.उ. वृद्धि (%)				उपाभोक्ता मूल्य (%)			
देश	2001	2002	2003 भ	2004 भ	2001	2002	2003 भ	2004 भ
अफ्रीका	**3.6**	**3.4**	**3.9**	**5.2**	**13.0**	**9.3**	**10.1**	**7.6**
महग्रेब	**4.1**	**3.3**	**4.5**	**4.3**	**2.6**	**2.2**	**3.3**	**3.1**
अल्जीरिया	2.1	3.1	3.5	4.3	4.2	1.4	4.2	4.0
मोरक्को	6.5	4.5	5.5	3.4	0.6	2.8	2.0	2.0
ट्यूनीसिया	5.2	1.9	5.0	6.0	1.9	3.1	3.3	2.9
उप सहारा	**3.8**	**3.5**	**4.2**	**6.4**	**21.6**	**12.2**	**13.9**	**10.3**
इथियोपिया	7.7	5.0	- 2.0	6.4	- 7.1	- 7.2	4.5	3.0
सूडान	5.3	5.0	5.8	6.2	4.9	6.0	5.0	5.0
कांगो	- 2.1	3.0	5.0	6.0	356.7	25.7	13.3	6.1
केन्या	1.2	1.2	1.8	3.1	5.8	2.0	4.8	2.4
तंज़ानिया	5.6	5.9	6.0	6.0	5.2	4.7	4.2	3.8
यूगांडा	5.5	6.6	5.7	6.2	4.5	- 2.0	1.0	3.5
अंगोला	3.2	17.1	4.7	10.6	152.6	108.9	75.6	19.3
ज़िम्बाब्वे	- 8.8	- 12.8	- 11.0	5.1	76.7	140.	450.0	350.0
घाना	4.2	4.5	4.7	5.0	32.9	14.5	11.8	6.5
नाइजीरिया	2.8	0.5	6.7	4.2	18.9	12.9	15.3	12.6
कैमरून	5.3	4.3	4.7	5.0	2.8	4.5	3.4	2.7
कोत दिवुआर	0.1	0.5	- 2.0	3.0	4.4	3.5	4.0	3.5
दक्षिण अफ्रीका	**2.8**	**3.0**	**2.8**	**3.2**	**5.7**	**10.0**	**8.5**	**5.7**

भ - भविष्यवाणी
स्रोत - अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष

" फ़ोकस अफ्रीका " कार्यक्रम

अफ्रीका के साथ भारत का व्यापार विशेष रूप से बढ़ाने के लिए भारत सरकार द्वारा 2002-03 वर्ष से " फ़ोकस अफ्रीका " नामक एक समेकित कार्यक्रम शुरू किया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य द्विपक्षीय व्यापार और निवेश के क्षेत्रों का पता लगाकर दोनों क्षेत्रों के बीच बातचीत बढ़ाना है। " फ़ोकस अफ्रीका" कार्यक्रम क्षेत्र की सात प्रमुख व्यापारिक भागादारों पर बल देते हुए नामत: नाइजीरिया, दक्षिण अफ्रीका, मॉरीशस, केन्या, इथियोपिया, तंज़ानिया और घाना और उप सहारा अफ्रीका क्षेत्र पर फ़ोकस करेगा जो कुल मिलाकर उप सहारा अफ्रीकी क्षेत्र के भारत का 69% कुल द्विपक्षीय व्यापार के लिए साथ उत्तरदायी है। 1 अप्रैल, 2003 से प्रभावी " फ़ोकस अफ्रीका " कार्यक्रम को अफ्रीका में 17 और देशों को शामिल करने के लिए विस्तार किया गया है (अंगोला, बोट्स्वाना, मोज़ाम्विक, ज़ांबिया, जिम्बाब्वे, नामीबिया, सेनेगल, आइवरी कोस्ट, युगांडा, मेडागास्कर, सीशैल्स, मिस्र, ट्यूनिसिया, सूडान, अल्जीरिया, लीबिया और मोरक्को), इसमें शामिल किए गए देशों की संख्या 24 हो गई।

इन देशों में निर्यातों के लिए विशिष्ट फ़ोकस उत्पादों का पता लगाया गया है जो निम्न प्रमुख उत्पाद समूहों में वर्गीकृत किए जा सकते हैं - सूती धागे, कपड़े और अन्य वस्त्र मदें, औषधियाँ और फार्मास्यूटिकल्स, मशीनरी और यंत्र, परिवहन उपस्कर, दूरसंचार और सूचना प्रौद्योगिकी। साथ ही भारत सरकार भारत व्यापार संवर्धन संगठन, निर्यात संवर्धन परिषदों, वाणिज्य एवं उद्योग के शीर्ष चैम्बर्स, भारतीय मिशन तथा संस्थान जैसे भारतीय एक्ज़िम बैंक और भा नि ऋ गा नि लि के समेकित प्रयासों से भारत के निर्यातों को बढ़ावा दे रहा। " फ़ोक़स अफ्रीका " कार्यक्रम के लिए ऋण-व्यवस्था भी शुरू की जाएगी जो तंज़ानिया, मोज़ाम्बिक, ज़ाम्बिया, युगांडा, केन्या, सीशैल्स, मॉरीशस,ज़िम्बाब्वे और घाना सहित अफ्रीकी देशों में पहले से ही शुरू की जा चुकी है।

अद्यतन व्यवसाय अवसर : आने वाली परियोजनाएं

पूरे विश्व में विविध निधीयन एजेंसियों जैसे विश्व बैंक (वि. बैं.), एशियाई विकास बैंक (ए. वि. बैं.), अफ्रीकी विकास बैंक (अ. वि. बैं.) तथा यूरोपीय पुनर्निर्माण एवं विकास बैंक (यू. पु. वि. बैं.) द्वारा निधिदत्त भारतीय निर्यातकों के लिए आने वाली परियोनाओं में चयनित अवसर नीचे दिए गए हैं।

व्यवसाय अवसरों के लिए इच्छुक निर्यातक संबंधित कार्यकारी एजेंसियों से संपर्क करें। विश्व व्यापार केंद्र संकुल, मुंबई स्थित हमारे समुद्रपारीय विविध निधीयन परियोजना समूह को आपकी सहायता करने में प्रसन्न होगी। कृपया टेली : 22185272 विस्तार 2301 पर गीता परूथी से संपर्क कीजिए।

देश / कार्यकारी एजेंसी	परियोजना /	निधीयन एजेंसी से ऋण
बुर्किना / परिवहन अवरचनात्मक सुविधाएं एवं आवास मंत्रालय, प्रोजेक्ट सेक्टोरिअल डेस ट्रांसपोर्ट्स, 03 बी पी 7048 ओडगाडोगाऊ 03 टेली : (226) 30-61-18/19 ई-मेल : pasect@fasonet.bf, संपर्क : जीन बर्टिन ओडराओगो	**परियोजना क्षेत्र परियोजना /** परियोजना का उद्देश्य सामाजिक, आर्थिक और आर्थिक रूप से टिकाऊ आधार पर लोगों तथा सामानों की वहनीयता संभावना बढ़ाना है। इस परियोजना के दो घटक हैं : पहला घटक संस्थागत समर्थन और क्षेत्रीय सुधारों पर फ़ोकस करता है जबकि दूसरा घटक सड़क नेटवर्क के सुधार में निवेश करता है।	विश्व बैंक 92 मिलियन अमेरिकी डॉलर
कंबोडिया / सीला टास्क फोर्स सेक्रेटेरिएट, काउंसिल फॉर डिवेलपमेंट ऑफ कंबोडिया गवर्नमेंट पैलेस, सिसोवाथ की, वाट नॉर्न नाम पेन्ह, कंबोडिया फैक्स : (855) 2398-1257 ई-मेल : yanara@camnet.com.kh संपर्क : महामहिम चिएंग, यानारा	**ग्रामीण निवेश तथा स्थानीय प्रशासन परियोजना /** परियोजना का विकास उद्देश्य तालुका स्तर पर वरीयता प्राप्त सार्वजनिक माल एवं सेवाओं के समर्थन प्रावधान के माध्यम से ग्रामीण विकास और गरीबी उन्मूलन में सहायता करना है तथा तालुका और राज्य स्तर पर विकेंद्रित और असांद्रित प्रतिभागी स्थानीय प्रशासन प्रणालियों के समर्थन से अच्छे स्थानीय प्रशासन को बढ़ावा देना है।	विश्व बैंक 22 मिलियन अमेरिकी डॉलर
बांग्लादेश / एशियाई विकास बैंक संपर्क : जोको सार्वी, शिक्षा विशेषज्ञ, सामाजिक क्षेत्र प्रभाग **सार्ड** टेली : (632) 632-6831 ई-मेल : jsarvi@adb.org	**द्वितीय प्रांरभिक शिक्षा विकास कार्यक्रम /** परियोजना का उद्देश्य सार्वभौमिक शिक्षा के माध्यम से गरीबी उन्मूलन और टिकाऊ सामाजिक आर्थिक विकास और बांग्लादेश के समाज में समानता कायम करना है।	एशियाई विकास बैंक 100 मिलियन अमेरिकी डॉलर
अफ़गानिस्तान / एशियाई विकास बैंक संपर्क : हसन मसूद, परियोजना अभियंता (परिवहन) दक्षिण एशिया परिवहन एवं संचार प्रभाग टेली: (632) 632-6818 ई-मेल: hmasood@adb.org	**आपातकालीन बुनियादी सुविधा पुनर्वसन एवं पुनर्निर्माण परियोजना /** परियोजना का मुख्य उद्देश्य अफ़गानिस्तान की इस्लामी संक्रमण सरकार की सहायता करना परिवहन (सड़क) और ऊर्जा (बिजली और गैस) क्षेत्रों में प्रमुख बुनियादी सुविधा बहाल करना है।	एशियाई विकास बैंक 150 मिलियन अमेरिकी डॉलर

देश / निष्पादक एजेंसी	परियोजना / संक्षिप्त ब्यौरा	निधीयन एजेंसी से ऋण
हंगरी / संपर्क : द्वारा आर्थर श्कलर, ई बी आर डी ई-मेल : suchankla@ebrd.com	**मोल-दुना वेस्टवाटर ट्रीटमेंट प्लांट आउट सोर्सिंग परियोजना /** परियोजना के उद्देश्यों हंगरी के तेल और गैस कंपनी एम ओ एल की बुडापेस्ट के करीब स्जालोमबट्टा में अपनी दुना रिफानरी में वेस्ट वाटर ट्रीटमेंट सुविधाओं को बढ़ाना है।	युरोपीय पुननिर्माण और विकास बैंक 20.5 मिलियन अमेरिकी डॉलर
उज़्बेकिस्तान / ई बी आर डी संपर्क टेली : (44 20) 7338 6534 फैक्स : (44 20) 7338 7472 ई-मेल : procurement@ebrd.com	**ताशकंद जल आपूर्ति सुधार कार्यक्रम /** परियोजना के निम्न भाग है - (i) मौजूदा वाटर पंपो, वाल्वों और ट्रांसफार्मरों का हटाना तथा जल वितरण इकाई, पंपिंग स्टेशन, वाटर मीटर और बावड़ी का निर्माण तथा (ii) ताशकंद जल कंपनी के लिए वित्तीय एवं परिचालनात्मक निष्पादन सुधार कार्यक्रम की तैयारी और कार्यान्वियन	यूरोपीय पुननिर्माण एवं विकास बैंक 9.8 मिलियन अमेरिकी डॉलर
लिसोथो / समाज कल्याण विभाग, स्वास्थ्य एवं कल्याण मंत्रालय। निदेशक आयोजना पो. आ. बॉक्स 514, मसेरू 100 टेली : (266) 324-561 फैक्स : (266) 323-010 ई मेल : hpsuhis@lesoff.co.ls. अफ्रीकी विकास बैंक संपर्क : श्री ए. डी. मेघा, निदेशक, देश परिचालन : अफ्रीकी विकास निधि द्वारा वित्तपोषित परियोजनाएँ टेली : (216) 7133-3511	**स्वास्थ्य एवं समाज कल्याण परियोजना /** परियोजना के प्रमुख घटक निम्न हैं : (क) समाज कल्याण सेवा विकास (ख) मानसिक चिकित्सा विकास प्रणाली (ग) मानव संसाधन विकास	अफ्रीकी विकास बैंक 10.9 मिलियन अमेरिकी डॉलर
गांबिया / कृषि राज्य विभाग क्वाड्रैंगल बंजुल टेली : (220) 202-322 फैक्स : (220) 228-998 अफ्रीकी विकास बैंक संपर्क : श्री जी टेलर्स - लेविस, निदेशक, देश परिचालन : पश्चिम टेली : (216) 7133-3511	**किसान प्रबंधित टाइडल सिंचित चावल परियोजना /** परियोजना केन्द्रीय नदी प्रखण्ड में टिकाऊ चावल उत्पादन के लिए आधार उपलब्ध कराता है जो साप् कृषि अनुसंधान स्टेशन के आसपास केंद्रित हैं। यह टाइडल इरिगेशन तकनीकों पर बल देगा जो परिचालन के लिए कम खर्चीली हैं तथा पम्प्ड इरिगेशन की तुलना में अनुरक्षण में आसान हैं।	अफ्रीकी विकास बैंक 6.8 मिलियन अमेरिकी डॉलर

अधिनिर्णीत संविदाएँ

तिमाही के दौरान भारतीय कंपनियों द्वारा प्राप्त चयनित संविदाएं

मोहन एक्सपोर्ट्स (इंडिया) प्राइवेट लि., नई दिल्ली	**विश्व बैंक** द्वारा निधीयित **अफगानिस्तान** में प्राप्त आपातकालीन बुनियादी सुविधा पुनर्निर्माण परियोजना के लिए केबल की आपूर्ति के लिए संविदा
लार्सन एण्ड टूब्रो लि., मुंबई	**विश्व बैंक** और **एशियाई विकास बैंक** सहित विविध एजेंसियों द्वारा निधीयित **बांग्लादेश** में सूरमा सीमेंटस प्लांट परियोजना के लिए प्राप्त टर्न की संविदा
टैग्रोस केमिकल्स इंडिया लिमिटेड, चेन्नई	**विश्व बैंक** द्वारा निधीयित **इरीट्रिया** में प्राप्त हैमसेट डीसीज कंट्रोल परियोजना के लिए रसायनों की आपूर्ति के लिए संविदा
टेक फैब इंटरनैशनल, नई दिल्ली	**विश्व बैंक** द्वारा निधीयित **रूसी संघ** में प्राप्त सामुदायिक सामाजिक बुनियादी सुविधा परियोजना के लिए जनरल अस्पताल उपस्कर की आपूर्ति संविदा
मेकिन्स एग्रो प्रॉडक्ट्स लि. हैदराबाद	**विश्व बैंक** द्वारा निधीयित **ताजिकिस्तान** में प्राप्त ग्रामीण बुनियादी सुविधा पुनवर्सन परियोजना के लिए मौसम एवं सर्वेक्षण उपस्कर की आपूर्ति की संविदा
प्लेथिको फार्मास्यूटिकल्स लिमिटेड, मुंबई	**विश्व बैंक** द्वारा निधीयित **युगांडा** में एच आइ वी। एड्स नियंत्रण परियोजना के लिए दवाइयों की आपूर्ति की संविदा
इंटरकांटिनेंटल कंसल्टेंट्स एण्ड टेक्नोक्रैट्स प्राइवेट लि., नई दिल्ली	**एशियाई विकास बैंक** द्वारा निधीयित **अफ़गानिस्तान** में प्राप्त पुनर्निर्माण और विकास परियोजना के लिए क्षमता निर्माण की परामर्शी संविदा
भारत हेवी इलेक्ट्रिक्ल्स लिमिटेड, नई दिल्ली	**लीबिया** में प्राप्त अल जबल बल धबों गैस टर्बाइन आधारित विजयी परियोजना के लिए टर्न की संविदा
इंजीनियर्स इंडिया लि., नई दिल्ली	**क़तार** में प्राप्त रस लफान टापसाइडस एण्ड वर्थस के लिए फ्रांट एन्ड इंजीनियरिंग डिजाइन की परामर्शी संविदा

सेवा क्षेत्र की निर्यात संभावना

हाल के वर्षों में विश्व बाज़ारों का वैश्वीकरण सेवा क्षेत्र के अंतरराष्ट्रीयकरण के कारण हुआ है। इसे वास्तविकता से देखा जा सकता है कि सेवाओं के वैश्विक निर्यात में वैश्विक वाणिज्यिक व्यापार की तुलना में अधिक तीव्र गति से बढ़ोत्तरी हुई है। 1995-2002 की अवधि में सेवाओं के विश्व निर्यात में व्यापारिक निर्यातों के 3.4% की तुलना में 4.3% की वृद्धि हुई। निर्यातों को प्रमुखता देने के लिए इस समय सेवाओं के व्यापार को अधिक महत्त्व दिया जाता है।

विश्व व्यापार संघ के अद्यतन आंकड़ों के अनुसार 2002 के दौरान भारत वैश्विक वाणिज्यिक सेवाओं के 1.3% के लिए उत्तरदायी है जबकि वैश्विक वाणिज्यिक निर्यातों का हिस्सा 0.8% रहा। भारत के विदेशी क्षेत्र में सेवा क्षेत्र का महत्त्व इस वास्तविकता से भी देखा जा सकता है कि 24 वर्षों में पहली बार भारत का चालू खाता संतुलन अधिशेष सेवा क्षेत्र के अत्यधिक अर्जन के कारण 2001-02 में 1.35 बिलियन अमेरिकी डॉलर रहा। सेवा क्षेत्रों के निर्यात के केन्द्र में यह अपवादात्मक वृद्धि सॉफ्टवेयर निर्यात में निहित है जो 2001-02 में 7.6 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 2002-03 में 9.5 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया जो 25.0% की अत्यधिक वृद्धि प्रतिबिंबित करता है।

विश्व व्यापार संगठन युग में सेवाएं और भारत के लिए अवसर

जनवरी 1995 से सेवाओं में विश्व व्यापार नियमों के बुनियादी ढांचे के अंतर्गत आ गया है - सेवाओं में व्यापार पर सामान्य करार। विश्व व्यापार संगठन - गैट्स के अंतर्गत नए मोल तोल सेवाओं के अत्यधिक खुलेपन से लाभ कमाने का विश्व व्यापी महत्त्वपूर्ण अवसर उपलब्ध कराया है। अंग्रेजी बोलने वाली कुशल जनशक्ति के साथ भारत सेवा क्षेत्र में व्यापार के उदारीकरण से अवसरों के दोहन की स्थिति में आया है। आम तौर पर भारत जैसे विकासशील देश का तुलनात्मक लाभ श्रम उन्मुख सेवाओं में निहित है हालांकि भारत के पास सॉफ्टवेयर और अन्य उच्च कुशल सेवाओं में भी सामर्थ्य है (उदाहरण के लिए स्वास्थ्य और निर्माण सेवाएं) अत: स्थानीय सुरक्षा में कमी के परिणामस्वरूप भारत, गैट्स से लाभ की आशा कर सकता है जो घरेलू संसाधन आवंटन तथा समुद्रपारीय मेधा के स्थानांतरण दोनों की कुशलता को बढ़ावा देने में सहायक सिद्ध होता है।

श्रम उन्मुख सेवाओं की व्यापक परिधि के साथ जैसे बैंकिंग और वित्तीय सेवाएं, होटल परिचालन और पर्यटन, निर्माण और अभियांत्रिकी सेवाओं से भारत अपनी कुशल जनशक्ति का लाभ उठाने की स्थिति में होगा। अत: गैट्स में सेवाओं के उदारीकरण का भारत के लिए अत्यधिक आर्थिक महत्त्व है, विशेषतया सॉफ्टवेयर के अतिरिक अन्य क्षेत्रों में।

बैंकिंग और वित्तीय सेवाओं के उदारीकरण से वित्तीय बिचौलियों की गतिविधियों की संभावना बढ़ेगी जिससे उनमें मितव्ययिता के पैमाने का दोहन होगा। वैश्विक व्यापार के विस्तार के समक्ष आने वाले धन एवं पूँजी बाज़ारों का अंतरराष्ट्रीयकरण तथा मुद्राओं की परिवर्तनीयता से वित्तीय सेवाओं को अत्यधिक महत्त्व मिला है। वित्तीय सेवाओं में व्यापार के उदारीकरण से लागत में कमी होती है, सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार होता है, छोटे वित्तीय बाज़ारों के जोखिम को व्यवस्थित रूप से घटाता है तथा संसाधन आवंटन में सुधार करता है।

दूसरा क्षेत्र जो उत्कृष्ट संभावना प्रस्तुत करता है - वितरण सेवा है - एक क्षेत्र जो श्रम उन्मुख है तथा पर्याप्त रूप से रोज़गार उपलब्ध कराता है। अन्य सेवा क्षेत्रों से निकट से जुड़े होने के कारण जैसे पर्यटन निर्माण उद्योग जैसे खाद्य प्रसंस्करण उद्योग तथा मनोरंजन और मौजमस्ती सेवाएं, वितरण सेवाओं किसी प्रकार का विकास अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्रों पर प्रभाव डालेगा।

जहाँ तक पर्यटन का सवाल है जो फिर एक उच्च संभावना क्षेत्र है। इस क्षेत्र में परिपक्वता आने में काफी समय लगेगा जो इस वास्तविकता से देखा जा सकता है कि भारत विदेशी पर्यटकों को बड़ी संख्या में आकर्षित नहीं कर पाया है। उदाहरण के लिए जहाँ इंडोनेशिया में 1990 के 2.2 मिलियन से 2001 में 5.2 मिलियन आंतरिक पर्यटक बढ़े वहीं भारत में 1.7 मिलियन से बढ़कर 2.5 मिलियन हुए। चीन और मलेशिया में 2001 के दौरान अंदर के पर्यटकों की संख्या क्रमश: 33.2 मिलियन और 12.8 मिलियन थी। जहाँ तक अंतरराष्ट्रीय पर्यटन से प्राप्तियों का सवाल है भारत की 2001 में प्राप्ति 3.0 बिलियन अमेरिकी डॉलर थी जो चीन (17.8 बिलियन अमेरिकी डॉलर) इंडोनेशिया (5.4 बिलियन अमेरिकी डॉलर) और मलेशिया (4.9 बिलियन अ.डॉ.) से अत्यधिक कम थी। नवोन्मेषी, उन्नत विपणन तकनीक तथा अत्यधिक निवेश लाने के लिए नए प्रयास करने होंगे।

दूसरे क्षेत्र जो अच्छी संभावनाएं देते हैं वे है पृष्ठ कार्यालय परिचालन जो रूटीन प्रशासनिक कार्यों, ग्राहक सेवाएं और तकनीकी समर्थन की सुदूर सुपुर्दगी पर व्यापक रूप से ध्यान केंद्रित करते हैं। (प्रतीकात्मक रूप से ऑफशोर)। वैश्विक संचार की गिरती लागत से अत्यधिक वेतन वाले विकसित देशों से लिपिकीय और व्यावसायिक सेवाओं की भारत को उप संविदा अत्यधिक आकर्षक परिकल्पना है। उद्योगों की श्रेणियाँ जहाँ पृष्ठ कार्यालय परिचालन सामान्य होते जा रहे हैं उनमें शामिल हैं एअर लाइन्स, ब्रोकरेज फर्म, क्रेडिट कार्ड संसाधक कंपनियों, विपणन व्यवसाय और सभी अन्य व्यवसाय जहाँ उच्च आयतन के संव्यवहार होते हैं।

निर्यात के संवेग को बनाए रखने तथा भावी निर्यात संभावनाओं को बढ़ाने के लिए सेवा निर्यात की अवहेलना नहीं की जा सकती। ये कल के उभरते तारे हैं जिन्हें पोषण की आवश्यकता है। भावी निर्यात रणनीति का महत्त्वपूर्ण तत्व प्रौद्योगिकी संबंधी निर्यातों, पर ध्यान देना होगा जो संबंधित सेवाओं से आय बढ़ाएगा जैसे तकनीकी और व्यावसायिक शुल्क, परामर्श शुल्क, तकनीकी जानकरी, रायल्टी और सॉफ्टवेयर।

2002 में अफ्रीकी विकास बैंक के प्रमुख निष्पादन

अफ्रीकी विकास बैंक की स्थापना 1964 में हुई थी। यह बैंक व्यष्टि रूप में तथा संयुक्त रूप में अपने क्षेत्रीय सदस्यों की सामाजिक प्रगति तथा आर्थिक विकास में योगदान देता है। अफ्रीकी देशों के 53 सदस्यों के अलावा अफ्रीकी विकास बैंक के 6 एशियाई, 14 यूरोपीय, 2 उत्तरी अमेरिकी और 2 लैटिन अमेरिकी देश इसके शेयर धारक हैं। लेकिन इस विविध बैंक का ऋण परिचालन और गैर ऋण गतिविधियाँ प्रारंभिक रूप से अफ्रीका पर केंद्रित है। अपने सामान्य पूँजीगत संसाधनों तथा पूँजी बाज़ारों से निधि जुटाकर अफ्रीकी विकास बैंक वित्तीय सहायता उपलब्ध कराता है। महाद्वीप में गरीब देशों की विकास परियोजनाओं के लिए रियायती निधि उपलब्ध कराके अफ्रीकी विकास निधि (अ. वि. नि.) अफ्रीकी विकास बैंक के प्रयासों की प्रशंसा करता है। अफ्रीकी विकास निधि सितम्बर, 2002 में 3.5 बिलियन अमेरिकी डॉलर से स्थापित हुई थी।

अफ्रीकी विकास बैंक परिचालात्मक गतिविधियों के प्रमुख अभिलक्षण जिसमें वित्तीय वर्ष 2002 में प्रमुख प्रवृत्तियों शामिल हैं उन्हें नीचे दिया गया है -

- अफ्रीका की दस सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाएं जो अफ्रीका के स.दे.उ. के 76% तथा इसकी जनसंख्या का 55% है उनमें केवल 2.2% वृद्धि हुई।
- 2002 में अफ्रीका की 2.8% की औसत वृद्धि शताब्दी के विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अपेक्षित 7% की दर से बहुत कम है तथा स.दे.उ. का 57% विदेशी कर्ज़ 2002 में अफ्रीका के लिए सबसे बड़ी समस्या है। फिर भी 14 देशों ने 5% से अधिक की वृद्धि दरें प्राप्त की हैं।
- 31 दिसंबर, 2002 को 22 अफ्रीकी देश एच आई पी सी के लिए अर्हक थे जबकि एच आइ पी सी देशों की ऋण वापसी 1998 में 21.1% से बढ़कर 2002 में 14.8 प्रतिशत हो गई।
- एच आई पी सी सहित अफ्रीकी विकास बैंक समूह का अनुमोदन 2002 में 2.77 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया।
- 2002 में एशियाई विकास बैंक का अनुमोदन 1.45 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया जो 8 वर्षों में सबसे उच्चतम था। 2002 में अफ्रीकी विकास निधि का अनुमोदन 1.31 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया। यद्यपि अफ्रीकी विकास निधि का 9 वीं आपूर्ति 2002 में पूरी हुई।
- 2002 में बैंक समूह ने सह वित्तपोषण परिचालनों से 3 बिलियन अमेरिकी डॉलर संघटित कर सका।

अफ्रीकी विकास बैंक की निधि की क्षेत्रवार और आंचलिक वितरण बॉक्स 1 में निम्न चार्ट में दिखाया गया है।

बॉक्स 1 अफ्रीकी विकास बैंक की 2002 की कुल निधीयन का योग : 2.77 बिलियन अमेरिकी डॉलर

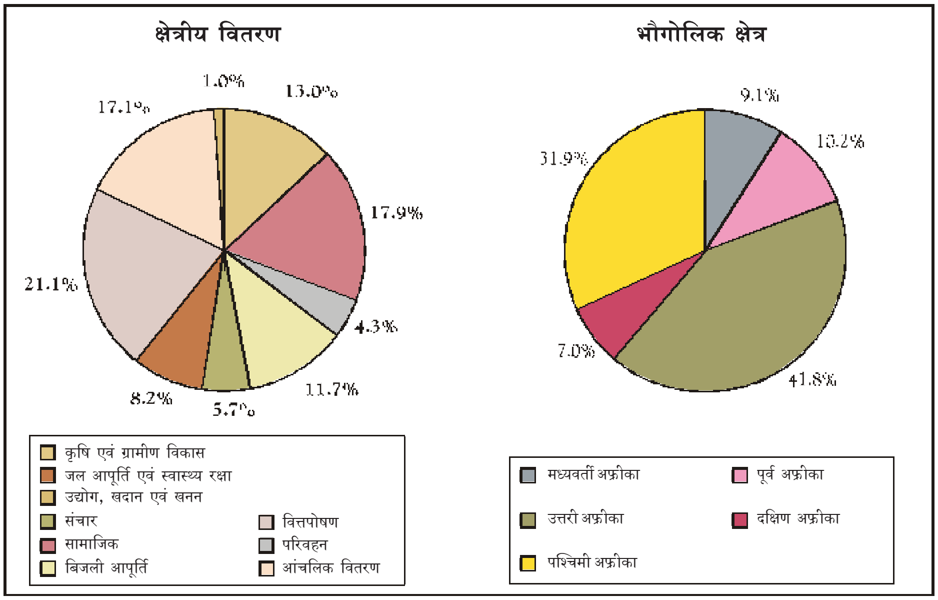

अफ्रीकी निर्यात-आयात बैंक की 2002 में कार्य निष्पादन की प्रमुख विशेषताएं

अंतरा अफ्रीकी व्यापार और अतिरिक्त अफ्रीकी की व्यापार को बढ़ावा देने के लिए अफ्रीकी सरकार, अफ्रीकी निजी और संस्थागत निवेशकों तथा गैर अफ्रीकी वित्तीय संस्थानों तथा निजी निवेशकों द्वारा अक्टूबर, 1993 में अबुजा, नाइजीरिया में अफ्रीकी निर्यात-आयात बैंक स्थापित किया गया। बैंक का मुख्यालय काहिरा में है । इसका उद्देश्य व्यापार को सुगम बनाना उसे बढ़ावा देना तथा उसका विस्तार करना है। इसका मिशन अफ्रीकी व्यापार के संगत विस्तार को प्रोत्साहित करना उसे विविधीकृत करना तथा उसका विकास करना है। साथ ही प्रथम श्रेणी के लाभप्रद वित्तीय संस्थान के रूप में कार्य करना तथा अफ्रीकी व्यापार मामलों में उत्कृष्टता का केंद्र बनाना है। बैंक ने 2002 के अनुमोदनों में 2% का मामूली विस्तार प्राप्त किया। (बॉक्स 2 देखें) जो 1.12 बिलियन पहुँच गया। 2002 के अंत में ऋण पोर्टफोलियो का विस्तार बढ़कर 419 मिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया।

बॉक्स 2: अफ्रीकी एक्ज़िम बैंक - क्षेत्रवार

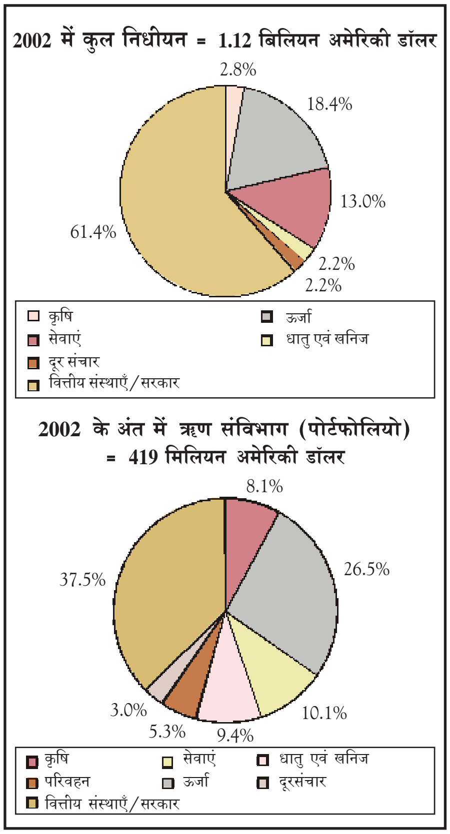

सफलता की कहानी - अल्काइल एमीन केमिकल्स लिमिटेड

अल्काइल अमाइन्स केमिकल्स लिमिटेड (अ.अ.के.लि.), मुंबई एक पब्लिक लिमिटेड कंपनी है जो एलिफैटिक अमाइन्स बनाती है। आयातों को प्रतिस्थापित करने के उद्देश्य से 1979 में स्थापित अ.अ.के.लि. ने अमेरिका के लिओनार्ड प्रोसेस कं इंक के तकनीकी सहयोग से एथिल अमाइन्स और साइक्लोटेक्सल अमाइन्स बनाने क लिए पाताल-गंगा, महाराष्ट्र में 1982 में अपना पहला संयंत्र स्थापित किया। इस समय अ.अ.के.लि. अमाइन्स के अनेक किस्में बनाने के लिए प्रमुख निर्माता हैं इसके उत्पाद रेंज में एलिफैटिक अमाइन्स, अमाइन्स डेरिवेटिव्स, विशेष रूप से रसायन और सूक्ष्म रसायन शामिल हैं। यह कंपनी डी एस पी फाइनेंसिअल कंसल्टेंट्स लि. और कोठारी परिवार के श्री योगेश कोठारी और श्री हेमेंद्र कोठारी द्वारा प्रवर्तित की गई। कंपनी के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक श्री योगेश कोठारी एक टेक्नोक्रेट व्यवसायी हैं। वे एक रसायन इंजीनियर हैं जिन्हें 25 वर्षों से अधिक का अनुभव है। अ. अ. के. लि. के निदेशक मंडल में 10 सदस्य हैं। इसमें टेक्नोक्रेट तथा व्यावसायिकों का एक दल है जिसके पास उद्योग का काफी लम्बा अनुभव है। अ.अ.के. लि. एक आइ एस ओ प्रमाणित कंपनी है। इसकी निर्माण सुविधाएं महाराष्ट्र के पाताल-गंगा और कुरकुम्भ में स्थित हैं जिसकी कुल क्षमता 25,000 टी पी ए है।

यद्यपि एमीनों के उत्पादन के लिए प्रारंभिक प्रौद्योगिकी लिओनार्ड प्रोसेस कं इंक, अमेरिका से आयात की गयी लेकिन इसके शक्तिशाली अनुसंधान एवं विकास आधार ने इसके सभी बाद वाले उत्पादों को अपने यहाँ विकसित किया। कंपनी के ग्राहक आधार में इंकेम केमि हैंडल हैम्बर्ग, जर्मनी, वी ओ एस बी वी, नीदरलैण्ड, बी ए एस एफ अंटवर्प एन वी, बेल्जियम, बेंको. अमेरिका, इटोचू यूरोप, जापान, प्लांटेक्स केमिकल इंडस्ट्रीज़, इज़राइल, ब्रेंटे, इटली शामिल है। अ. ए. के. लि. के घरेलू ग्राहकों में कलरकेम इंडस्ट्रीज़ लि. यूनाइटेड फासफोरस लि. बायर इंडिया लि. आइ सी आइ लि. नोसिल, रैनबैक्सी, लैबोरेटरीज लि., इप्का लैबोरेटरीज शामिल है। कंपनी का संविदा का संविदा निर्माण प्रखण्ड प्रौद्योगिकी विकास, स्केल अप, तथा कृषि रसायन, फर्मास्यूटिकल्स और विशिष्टता प्राप्त रसायन उद्योगों में ग्राहकों को रीति निर्माण समर्थन उपलब्ध कराता है। कंपनी ने हाल ही में औद्योगिक जैव प्रौद्योगिकी क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास कार्य करने के लिए जैव प्रसंस्करण प्रखण्ड स्थापित किया है जिसमें जैव विलगन, जैव रूपांतरण, जैव निरूपण तथा जैव उत्प्रेरक पर विशेष बल दिया गया है।

पिछले दशक में कंपनी का राजस्व 1994 में 28 करोड़ रु. से बढ़कर 2003 में 105 करोड़ रु. हो गया है। 1992 में भारतीय तटों से बाहर जाकर नए बाज़ारों का पता लगाकर कंपनी ने अपनी बिक्री बढ़ाने की रणनीति अपनाई क्योंकि इसे पता है कि घरेलू बाज़ार शीघ्र ही वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए खुलेंगे। एथिल अमाइन में इसने अपनी कोर शक्ति का पता लगाया तथा वैश्विक निर्माण आयतन तक पहुँचने के लिए अपनी अमाइन क्षमता का विस्तार किया। अतएव 1999 में 16 लाख रु. के मामूली निर्यात जो निर्यात अभिमुखीकरण का 0.5% था की तुलना में कंपनी ने 2003 में 27% निर्यात अभिमुखीकरण प्राप्त किया। इसने 28 करोड़ रु. का निर्यात किया जिसमें उत्तरी अमेरिका, दक्षिण अमेरिका, यूरोप, अफ्रीका और एशिया के 30 से अधिक गंतव्य देशों में निर्यात किया। जहाँ तक लाभप्रदता और मार्जिन का सवाल है शुरुआत से ही लाभ के संगत ट्रैक रिकार्ड के बाद 2001 में कंपनी को पहली बार 8 करोड़ रु. का घाटा हुआ। यह मुख्य तथा कंपनी द्वारा खर्च किए गए 36 करोड़ रु. के पूँजीगत व्यय के कारण उच्च व्याज और मूल्यह्रास लागत के कारण था। इसके अलावा चीन के साथ प्रतिस्पर्धा के कारण अमाइनों और डेरिवेटिव के बिक्री मूल्यों में गिरावट के कारण तथा साथ ही निविष्टि लागतों में वृद्धि के कारण कंपनी के निषपादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। कंपनी ने तत्काल कदम उठाया। इसने उत्पाद मिलावट में सुधार किया जो उत्पादन सुविधाओं में किए गए पूँजीगत निवेश द्वारा सुगम हुआ, नए बाज़ारों का पता लगाया, अत्यधिक लागत कटौती के तरीके अपनाए तथा स्थिति को संभालकर कंपनी एक वर्ष में फिर से अच्छी स्थिति में आ गयी और 2002 में 2 करोड़ रु. का लाभ कमाया। कंपनी ने डाइमीन्स और केमिकल्स लिमिटेड बड़ौदा को भी पुनर्जीवित किया जो बी आइ एफ आर से ली गई एक बीमार कंपनी थी।

एक्ज़िम बैंक ने इसके विस्तार-आधुनिकीकरण चरण से हो अ. अ. के. लि. की सहायता की है। बैंक ने समय से वित्तीय समर्थन दिया है जिससे कंपनी को आयतन, उत्पाद एवं बाज़ार पहुँच के रूप में कंपनी ने अमाइन डेरिवेटिव के उत्पादन के लिए एक बहुउद्देश्यीय संयंत्र स्थापित किया (एम पी पी - I तथा एम पी पी - II) तथा जनवरी 1997 में महाराष्ट्र, पुणे में डाइमिथाइल अमाइन प्रोपाइल अमाइन और डाईमिथाइल साइक्लो टेक्सिल अमाइन के निर्माण के लिए एम पी पी III कमीशन किया। एक्ज़िम बैंक ने निर्यात उन्मुख इकाइयों के लिए अपने ऋण कार्यक्रमों के अंतर्गत सावधि ऋण के रूप में परियोजना के लिए 1999 में 16.20 करोड़ रु. का वित्तीय समर्थन उपलब्ध कराया। एक्ज़िम बैंक ने उच्च लागत ऋण प्रतिस्थापित करने के लिए 5 करोड़ रु. का सावधि ऋण भी उपलब्ध कराया है जिससे कंपनी को वैश्विक निर्माण आयतन तक पहुँचने में मदद मिली है तथा कंपनी को विश्व स्तर पर एलिफैटिक अमाइन के कोने के क्षेत्र में सबसे तेज़ बढ़ते और प्रमुख खिलाड़ी के रूप में उभरने में सहायता मिली है।

भारत में पूँजीगत लेखे का उदारीकरण - हाल की गतिविधियाँ

पूँजीगत लेखे की परिवर्तनीयता पर तारापोर समिति ने 1997 में पूँजीगत लेखे के चरणबद्ध उदारीकरण की वकालत की थी। इसमें राजकोषीय समेलन, सर्वसम्मत मुद्रास्फीति लक्ष्य और इन सबके अलावा वित्तीय प्रणाली को सुदृढ़ करने की वकालत की गई थी। विदेशी क्षेत्र में हाल के अनुकूल विकास से भारत की वित्तीय स्थिति समेकित हुई है और इस तरह पूँजीगत लेखे के आगे खोलने के लिए अनुकूल वातावरण तैयार किया है। 2001-02 में 1 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक के पूँजीगत खाता अधिशेष जो शक्तिशाली विदेशी निवेश से उभरा तथा अप्रवासी जमा में आवक (चार्ट) साथ ही अप्रैल-दिसंबर 2002 में 2.8 बिलियन अमेरिकी डॉलर के चालू खाता अधिशेष से विदेशी मुद्रा भण्डार में वृद्धि हुई। 13 जून, 2003 को भारत का विदेशी मुद्रा भण्डार 82.4 बिलियन अमेरिकी डॉलर था। ये और इसके साथ डॉलर के संबंध में भारतीय रुपए के सुदृढ़ीकरण से सरकार को भारतीय व्यष्टियों और कार्पोरेटों द्वारा समुद्रपारीय निवेश को करने में प्रोत्साहन मिला।

समुद्रपारीय स्टॉक एक्सचेन्जों में सूचीबद्ध तथा सूचीबद्ध भारतीय कंपनियों में कम से कम 10% शेयरधारिता रखनेवाली कंपनियों में 1 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक का निवेश करने के लिए म्युचुअल फंडों को अनुमति दी गई। इसी तरह भारतीय कंपनियों को अपनी शुद्ध पूँजी का 25% समुद्रपारीय स्टॉक एक्सचेन्जों में सूचीबद्ध कंपनियों में निवेश की अनुमति दी गई जो सूचीबद्ध भारतीय कंपनियों में कम से कम 10% शेयरधारिता कंपनियों को भी विदेशों में अपने कार्यालय स्थापित करने और व्यवसाय या आवासीय आवश्यकताओं के लिए विदेशों में अचल संपत्तियाँ अधिग्रहण करने की अनुमति दी गई। इसके अलावा अमेरिकी जमा रसीद। वैश्विक जमा रसीद (ए डी आर/जी डी आर) बनाए रखने के लिए कंपनियों द्वारा भावी निर्यात अपेक्षाओं के लिए उत्पन्न की सीमा वापस ले ली गई। निर्यातों को सुगम बनाने की दृष्टि से सरकार ने निर्यात अर्जन विदेशी मुद्रा खाता धारकों के व्यापार संबंधित ऋणों और अग्रिमों पर से सभी सीमाएं हटा दी हैं। लेकिन संव्यवहार भारतीय रिज़र्व बैंक को रिपोर्ट किए जाते रहेंगे। इसके अलावा कर्मचारी स्टॉक विकल्प कार्यक्रम के अंतर्गत प्रेषणों की 20,000 अमेरिकी डॉलर की सीमा समाप्त कर दी गई है।

जहाँ तक व्यष्टियों का सवाल है भारतीयों को विदेशों में उन कंपनियों में निवेश करने की अनुमति दी गई है जो समुद्रपारीय स्टॉक एक्सचेंजों में सूचीबद्ध भारतीय कंपनियों में कम से कम 10 प्रतिशत शेयरधारिता रखती हैं। निवेश सीमा पर दिशा निदेश अभी भी सरकार द्वारा घोषित किये जाने हैं। समुद्रपारीय यात्रा के उद्देश्य से व्यष्टि नागरिकों को विदेशी मुद्रा उन्मोचन करने में अत्यधिक उदारीकरण किया गया है तथा समुद्रपारीय यात्रा से अर्जित या शेष रखी गई विदेशी मुद्रा में से विदेशी मुद्रा जमा बनाए रखने के लिए भारतीय नागरिकों को अनुमति दी गई है।

प्राधिकृत डीलरों को भारतीय करों के अधीन अप्रवासी सामान्य खातों आस्तियों के बिक्री उत्पन्नों से 1 मिलियन अमेरिकी डॉलर के प्रेषण की अनुमति दी गई है। शिक्षा, चिकित्सा, अचल संपत्ति आदि के बिक्री उत्पन्न के उद्देश्य से विभिन्न राशियों की अनुमति के संबंध में मौजूदा छूटों को भी हटा लिया गया है। इसका उल्लेख करना उचित होगा कि केन्द्रीय बजट 2002-03 में अप्रवासी योजनाओं को पूर्ण रूप से परिवर्तनीय बना दिया गया है। अ. भा. जमा योजनाओं में पूर्ण परिवर्तनीयता लाने के उद्देश्य से अप्रैल 2002 से अप्रवासी अप्रत्यावर्तनीय लेखा समाप्त कर दिया गया।

ये नीतिगत पहलें धीरे-धीरे पूँजीगत लेखे की पूर्ण परिवर्तनीयता की ओर बढ़ने का संकेत देती है। लेकिन यह समझना महत्त्वपूर्ण होगा कि पूर्ण परिवर्तनीयता अपरिहार्य नहीं है। पूँजीगत लेखा में उच्चतर डिग्री की स्वतंत्रता से दोतरफा पूँजी प्रवाह बढ़ेगा अतएव इन प्रवाहों का प्रभाव सावधानीपूर्वक तथा कुशलता से हल किया जाना चाहिए ताकि पूर्व एशियाई संकट जैसे वित्तीय संकट से बचा जा सके।

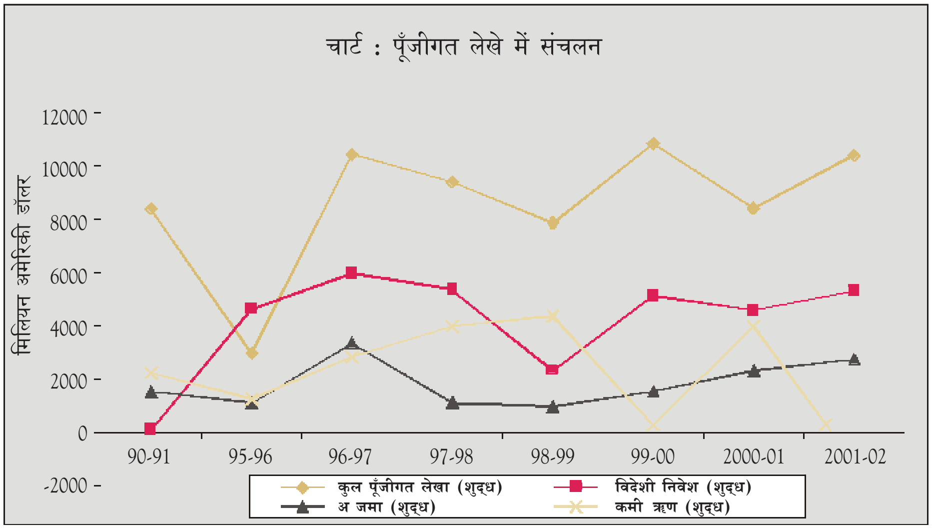

स्रोत - आर्थिक सवेक्षण 2002-03

एंटी-डंपिंग : विश्व व्यापार संगठन के अंतर्गत वर्तमान मुद्दे

गैट 1994 की धारा VI के अंतर्गत कोई सदस्य देश किसी उत्पाद के आयात पर एंटी-डंपिंग उपाय लगा सकता है जिसका निर्यात मूल्य निर्यातक देश के घरेलू बाज़ार में उत्पाद के तुलनात्मक मूल्य से कम हो (जिसे सामान्य मूल्य कहा जाता है) यदि इस तरह का आयात संबंधित सदस्य देश के घरेलू बाज़ार पर खतरा हो या उससे खतरे की संभावना है। एंटी-डंपिंग शुल्क लगाने के पीछे उद्देश्य अंतरराष्ट्रीय व्यापार में विद्रूपता को प्रतिबंधित करना है ताकि घरेलू उद्योग की सुरक्षा की जा सके। लेकिन ऐसे भी उदाहरण हैं कि कई देशों ने घरेलू उद्योग को अनुचित सुरक्षा उपलब्ध कराने के लिए एंटी-डंपिग करार का इस्तेमाल किया है। उदाहरण के लिए 1995-2002 की अवधि में कथित डंपिंग के विरुद्ध विश्व व्यापार संगठन में आस्ट्रेलिया द्वारा रिपोर्ट किए गए 155 मामलों में से विवाद समझौता निकाय ने उनमें से केवल 40 मामलों में एंटी-डंपिंग उपायों का निर्देश दिया। इससे पता चलता है कि आस्ट्रेलिया के पक्ष में जांच की सफलता की दर 26% नीचे है। उल्लेखनीय है कि भारत यद्यपि विश्व व्यापार संगठन में डंपिंग शुरू करने में अग्रणी है लेकिन जांचों में इसे 66% की दर से सफलता मिली है।

दोहा के मंत्रीस्तरीय सम्मेलन में विश्व व्यापार संगठन के अंतर्गत मोलतोल का अवसर उपलब्ध कराया है जिसका उद्देश्य एंटी-डंपिंग पर करार के अंतर्गत अनुशासनों को स्पष्ट करना तथा सुधारना है ताकि इन करारों की प्रभावशीलता सुनिश्चित की जा सके तथा विकासशील और कम विकसित देशों की आवश्यकताओं का ध्यान रखा जा सके। मोलतोल के दौरान सदस्यों को व्यापार विद्रूपक चलनों पर अनुशासन सहित प्रावधान बनाना अपेक्षित है जो वे स्पष्टीकरण चाहें तथा बाद के चरण में सुधार करें। इससे विकासशील देशों को नियमों को समाप्त करने या उन्हें कम करने का अवसर मिलेगा जो विकसित और विकासशील देशों के बीच असंतुलन पैदा करते हैं। उदाहरण के लिए वर्तमान नियमों में घरेलू उद्योग के अकुशल परिचालन के लिए समायोजन का कोई प्रावधान नहीं है। अब स्पष्टीकरणों की संभावना और करार के अनुशासन में सुधार के साथ ऐसे व्यापार विद्रूपक प्रणाली का ख्याल रखने के लिए पहलें की जानी चाहिए।

विकसित देशों की अस्पष्ट, प्रतिरक्षात्मक व्यापार चलनों के विरुद्ध अपनी आवाज़ उठाने के अलावा विकासशील देश विकसित देशों द्वारा डंपिंग गतिविधियों के खिलाफ बोलते रहे हैं। जहाँ तक 2002 में एंटी-डंपिंग जांच के मामलों में पहल का सवाल है। तालिका 1 में विकसित देशों पर विकासशील देशों का वर्चस्व दिखाया गया है। 2002 में शुरू की गई क्षेत्रीय वर्गीकरण की जांचों से स्पष्ट होता है कि अधिकांश उत्पाद आधार धातु श्रेणी में आते हैं, जिनमें लोहा, इस्पात और अल्यूमीनियम उत्पाद शामिल हैं। रसायन दूसरे सबसे अधिक प्रभावित क्षेत्र में आते हैं। आज तक चीन ने सबसे अधिक डंपिंग मामलों का मुकाबला किया है उसके बाद कोरिया, अमेरिका और चीनी ताइवान हैं। तथापि उनके खिलाफ नई जांचों की कुल संख्या में कमी आई है जो 2001 में 106 से घटकर 2002 में 83 हो गई। यह सामान्य प्रवृत्ति के अनुरूप है तथा 2002 में नई जांचों की समग्र कमी है। लेकिन इस प्रवृत्ति में अपवाद भी रहे हैं। पूर्व यूरोप के देश जैसे रूस, पोलैण्ड, रोमानिया, कज़ाकिस्तान ने 2001 से अधिक 2002 में जांचों का मुकाबला किया। भारत से निर्यात के विरुद्ध नई जांचों की संख्या भी बढ़कर 12 से 13 हो गई है।

रिपोर्ट करने वाले प्रमुख देशों द्वारा डंपिंग जांच से प्राप्त सफलता के मुद्दे पर विचार करते हुए विचित्र अभिलक्षण देखा जा सकता है। भारत (331), अमेरिका (292), यूरोपीय समुदाय (267)[1], अर्जेंटीना (180) और दक्षिण अफ्रीका (160) ये सभी 61-67% के बीच सफल रहे हैं। 2002 में ये देश 2001 की अपेक्षा संचयी आधार पर कम संख्या में रिपोर्ट किए गए हैं। 2002 में नई जांचों में केवल थाइलैण्ड ने 2001 की तुलना में विशिष्ट वृद्धि रिपोर्ट की है।

तालिका : 2002 में एंटी-डंपिंग जांच

अवधि	*पहलों की कुल सं.*	*विकसित देशों द्वारा पहलें*	*विकासशील और कम विकसित देशों द्वारा पहलें*
1 जनवरी - 30 जून 2002	104	37	67
1 जुलाई - 31 दिसंबर, 2002	149	40	109

स्रोत - विश्व व्यापार संगठन की प्रेस विज्ञप्ति 2 मई 2003 और 23 अक्तूबर, 2002

[1]. कोष्ठक में दिए गये आंकड़े वर्ष 1995-2002 के दौरान जाँच के लिए, पहल किये गये संख्या को दर्शाता है।

“ निर्यातों में मात्रात्मक उछाल की रणनीति : अफ्रीकी, लैटिन अमेरिका और चीन पर फ़ोकस ” पर आलेख

“नि**र्यातों में मात्रात्मक उछाल की रणनीति : अफ्रीकी, लैटिन अमेरिका और चीन पर फ़ोकस** ” एक्ज़िम बैंक के अगले आलेख में उल्लेख है कि निर्यातों में मात्रात्मक उछाल प्राप्त करने के लिए भारत को लैटिन अमेरिका, अफ्रीका और चीन के क्षेत्रों में विकासशील देशों के बाज़ारों में लक्ष्य करना चाहिए। अध्ययन की आधारभूत परिकल्पना यह है कि भारत लैटिन अमेरिका के आयातों का 2 प्रतिशत (100 पता लगाये गए संभावित उत्पादों में से) चीन के आयातों का 5 प्रतिशत (64 पता लगाये गए संभावित उत्पादों में से) तथा अफ्रीका के समग्र आयातों का 10 प्रतिशत के हिस्से के लिए उद्देश्य रखना चाहिए।

अध्ययन में अनुमान लगाया गया है कि भारत 2001-02 में 2.8 बिलियन अमेरिकी डॉलर के निर्यात स्तर के विरुद्ध वर्ष 2007 तक अफ्रीकी क्षेत्र में 18 बिलियन अमेरिकी डॉलर के निर्यात का न्यूनतम लक्ष्य रखा है। अध्ययन में चीन के लिए निर्यात किए जाने वाले 64 उत्पादों का पता लगाया गया है, यदि समुचित रणनीतियाँ अपनाईं गई तो निर्यात 0.8 बिलियन अमेरिकी डॉलर के वर्तमान स्तर से 2007 तक 4 बिलियन अमेरिकी डॉलर पार कर जाएगा। लैटिन अमेरिकी क्षेत्र के लिए भारत से निर्यात किए जाने वाले 100 लक्ष्य उत्पाद समूहों का पता लगाया गया है। अध्ययन में अनुमान लगाया गया है कि इन उत्पाद समूहों से भारत वर्ष 2000 के 0.58 बिलियन अमेरिकी डॉलर की तुलना में 2007 तक 1.8 बिलियन अमेरिकी डॉलर के स्तर तक का निर्यात लक्ष्य प्राप्त कर सकता है।

आलेख में सुझाव दिया गया है कि पता लगाये गये क्षेत्रों में भारतीय निर्माताओं को अत्यधिक प्रतिस्पर्धी होना चाहिए तथा प्रौद्योगिकी लाकर तथा अनुसंधान एवं विकास को सुदृढ़ करके अपना निर्माण आधार मज़बूत करना चाहिए।

“ भारत से आर्गेनिक उत्पादों का निर्यात : संभावनाएं और चुनौतियाँ ” पर प्रासंगिक आलेख

‘भा**रत से आर्गेनिक उत्पादों का निर्यात : संभावनाएं और चुनौतियों पर** ’ एक्ज़िम बैंक के प्रासंगिक आलेख में उल्लेख किया गया है कि यद्यपि अभी बिल्कुल नया है लेकिन भारतीय आर्गेनिक उद्योग ने कतिपय प्रमुख क्षेत्रों जैसे चाय, काफी, मसाले, फल एवं सब्जी उत्पाद और चावल में विश्व के आर्गेनिक बाज़ार में रास्ता बनाया है।

अध्ययन में स्पष्ट किया गया है कि विश्व के आर्गेनिक बाज़ार का मूल्य 26 बिलियन अमेरिकी डॉलर आंका गया है। 20 मिलियन हेक्टेअर में इसकी खेती की जाती है। लेकिन आर्गेनिक उत्पादों का उत्पादन और खपत विश्व की पारंपरिक कृषि उत्पादन और खपत का 1 प्रतिशत है। 95 प्रतिशत से अधिक खपत विकसित देशों में होती है।

इस वैश्विक परिदृश्य की तुलना में अध्ययन में भारतीय आर्गेनिक उद्योग का वर्णन किया गया है जिसका मूल्य 20 मिलियन अमेरिकी डॉलर (100 करोड़ रु.) आंका गया है। वर्तमान पारंपरिक कृषि उत्पादन जिसका मूल्य 62 बिलियन अमेरिकी डॉलर आंका गया है की तुलना में यह नगण्य है।

अध्ययन में अनुमान लगाया गया है कि भारत की विश्व बाज़ार में हिस्सेदारी है। मात्रा की दृष्टि से यह आर्गेनिक चाय का 35 प्रतिशत, आर्गेनिक काफी का 1 प्रतिशत से कम हिस्सा तथा आर्गेनिक मसालों का 11 प्रतिशत हिस्सा है।

अनुसंधान अध्ययन इस निष्कर्ष के साथ समाप्त किया गया है कि उत्तर पूर्व क्षेत्र के पास भारत में आर्गेनिक कृषि के विकास लिए अत्यधिक संभावनाएं हैं क्योंकि इस क्षेत्र का प्रमुख भाग आर्गेनिक है। अध्ययन में सुझाव दिया गया है कि मूल्यवर्धित आर्गेनिक निर्यातों, संवर्धनात्मक कार्यक्रमों के जरिए जागरुकता निर्मित करके तथा ऐसे संवर्धनात्मक प्रयासों के लिए अनन्य ग्रंथि एजेंसी निर्मित करके और इन पर फ़ोकस करके आर्गेनिक निर्यातों को बढ़ाया जा सकता है।

“ फ़ोकस सी आइ एस ” कार्यक्रम

1 अप्रैल, 2003 से भारत सरकार ने “ फ़ोकस सी आइ एस ” कार्यक्रम शुरू किया है। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य द्वीपक्षीय हित एवं निवेश के क्षेत्रों का पता लगाकर व्यवसायियों के बीच परस्पर प्रत्यक्ष बातचीत बढ़ाना है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत सी आइ एस क्षेत्रों के देशों पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। पहले 7 देशों पर बल दिया जाएगा जैसे कज़ाखस्तान, किर्घिस्तान, उज़्बेकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, ताजिकिस्तान, अज़रबैजान, और यूक्रेन।

सी आइ एस क्षेत्र के देशों के साथ व्यापार बढ़ाने की व्यापक संभावना है। इन देशों के साथ भारत का कुल व्यापार 2001-02 में 1706 मिलियन अमेरिकी डॉलर था जिसमें 968 मिलियन अमेरिकी डॉलर का निर्यात था तथा 738 मिलियन अमेरिकी डॉलर का आयात था। इस कार्यक्रम में फ़ोकस उत्पाद समूहों। प्रौद्योगिकी। सेवा क्षेत्र का पता लगाया गया है। फ़ोकस सी आइ एस कार्यक्रम भारत सरकार और अन्य संस्थाओं / एजेंसियों का एकीकृत प्रयास है जिनमें एक्ज़िम बैंक, भारतीय निर्यात ऋण गारंटी निगम, निर्यात संवर्धन परिषदें, भारत व्यापार संवर्धन संगठन, वाणिज्य एवं उद्योग चैम्बर, तथा भारतीय मिशन शामिल हैं।

क्षेत्र में व्यापार और निवेश बढ़ाने के उद्देश्य से एक्ज़िम बैंक ने पहलें की हैं जो क्षेत्र में सरकार के नवीकृत फ़ोकस के अनुरूप है। इन गतिविधियों में (i) विदेश व्यापार के लिए बैंक को ऋण - व्यवस्था (वनेशतोर्ग बैंक) और रूस का बैंक फॉर फॉरिन ईकोनोमिक अफेयर्स (व्नेसइकोनाम बैंक) (ii) यूरोपीय पुनर्निर्माण एवं विकास बैंक के व्यापार सुगमीकरण कार्यक्रम के अंतर्गत ऋण-व्यवस्था की संपुष्टि (iii) आइ एफ सी के निजी उद्यम भागीदारी के अंतर्गत केन्द्रीय और पूर्वी यूरोप में परियोजनाओं के लिए भारतीय परामर्शदाताओं को समर्थन देना और (iv) क्षेत्र में वित्तीय संस्थानों, व्यापार एवं निवेश संवर्धन एजेंसियों के साथ संस्थागत संबंध शामिल हैं।

निर्यात विपणन और सूक्ष्म तथा विशेष रसायनों की सोर्सिंग पर कार्यशाला

भारतीय एक्ज़िम बैंक ने विकासशील देशों से आयात संवर्धन केन्द्र नीदरलैण्ड के साथ मिलकर निर्यात विपणन और सूक्ष्म तथा विशेष रसायनों की सोर्सिंग पर मुंबई और अहमदाबाद में मार्च, 2003 में अनेक कार्यशालाएं आयोजित की हैं। कार्यशालाओं का उद्देश्य यूरोपीय संघ को भारतीय विशेष रसायनों के निर्यातों को बढ़ावा देना था। नीदरलैण्ड सरकार द्वारा स्थापित एक एजेंसी, सी बी आइ विकासशील देशों की छोटे तथा मध्यम आकार के उद्यमों को यूरोपीय संघ में निर्यात के उनके प्रयासों का समर्थन करता है।

मुंबई में कार्यशाला में भारी संख्या में उपस्थित सहभागियों को संबोधित करते हुए श्री टी. सी. वेंकट सुब्रमण्यन, प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यपालक अधिकारी एक्ज़िम बैंक ने अपने स्वागत भाषण में यूरोप जैसे मांग तथा हठीले बाज़ारों में अपने उत्पादों और सेवाओं के विपणन के लिए छोटे और मध्यम आकार उद्यमों को समर्थन देने पर एक्ज़िम बैंक की भूमिका पर विचार व्यक्त किया। उन्होंने यूरोपीय बाज़ारों को हथियाने में व्यावसायिक सुरक्षा एवं प्रक्रिया सुरक्षा मानकों के अनुपालन की आवश्यकता पर भी बल दिया।

कार्यशाला में यू सं रसायन उद्योग में व्यापार चैनल उत्पाद स्टिवर्डशिप और प्रशुल्क व्यापार बाधाएं तथा सूक्ष्म और विशेष रसायनों के लिए सी बी आइ के निर्यात विकास कार्यक्रम जो एक्ज़िम बैंक के साथ मिलकर क्रियान्वित किये जाने सहित अनेक मुद्दे शामिल किए गए। तकनीकी सत्र सी बी आइ संकाय और प्रतिभागी फर्मों के बीच एक-एक करके कई बैठकों में लिए गए। एक्ज़िम बैंक का नीदरलैण्ड के सी बी आइ के साथ बहुत पुराना संबंध है। विभिन्न क्षेत्रों पर फ़ोकस करते हुए जो यूरोपीय संघ में निर्यात की अत्यधिक संभावना रखते हों एक्ज़िम बैंक ने ऐसी कार्यशालाएं एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए हैं।

"(इंडो-लैक बिज़नेस) पत्रिका" का विमोचन

एक्ज़िम बैंक ने विश्व व्यापार केन्द्र के साथ मिलकर अप्रैल 2003 में एक कार्यक्रम आयोजित किया। इसमें इंडो-लैक बिज़नेस नामक नया प्रकाशन शुरू किए जाने का निर्णय लिया गया जिसमें लैटिन अमेरिका और कैरिबिअन क्षेत्र के साथ व्यापार करने पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। न्यू मीड्यिा कम्यूनिकेशन्स की एक तिमाही समाचार पत्रिका इंडो-लैक बिज़नेस डा. वी. एस. गोपाल कृष्णन, महानिदेशक विश्व व्यापार केंद्र द्वारा विमोचित की गई।

द्विभाषी (अंग्रेजी एवं स्पैनिश) पत्रिका क्षेत्र में व्यवसाय अवसरों के बारे में अत्यधिक सूचना उपलब्ध कराती है। यह लैटिन अमेरिकी और केरेबियन क्षेत्र के देशों के साथ व्यापार बढ़ाने के लिए भारतीय व्यवसाय उद्यमों के लिए उपयोगी संदर्भ साबित होगी।

एल ए सी क्षेत्र भारतीय कंपनियों के लिए व्यापार और निवेश दोनों तरह से विशिष्ट व्यवसाय अवसर उपलब्ध कराता है। क्षेत्र की संभावना को देखते हुए वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय ने फ़ोकस लैक नामक समेकित कार्यक्रम शुरू किया।

एक्ज़िम बैंक ने भी ऐसी गतिविधियों के समर्थन के लिए अनेक पहलें की हैं जो भारत सरकार के फ़ोकस लैक कार्यक्रम के साथ अच्छी तरह मिलती है। क्षेत्र में द्विपक्षीय व्यापार और वाणिज्यिक संबंधों को बढ़ाने के लिए एक्ज़िम बैंक ने प्रत्येक को 10 मिलियन अमेरिकी डॉलर की ऋण-व्यवस्था उपलब्ध करायी है इनमें बैंको ब्राडस्को, ब्राज़ील, बैंको डी कामर्सिओ एक्सटिरिअर डी कोलंबिया (बैंकोल्डेक्स), कोलंबिया, कार्पोरेशन एंडिना डी फोमेन्टो (कैफ), बैंको इंडस्ट्रियल डी वेनेजुएला, वेंजुएला, बैंको नेशनल कामर्सिओ एक्टिरिअर एस एन सी (बैंकोमेक्स्ट), मेक्सिको और सेन्ट्रल अमेरिकन बैंक फॉर इकोनोमिक इंटीग्रेशन (सी ए वी ई आइ) शामिल हैं ताकि क्षेत्र में भारतीय निर्यातों को बढ़ावा दिया जा सके। दोनों क्षेत्रों के बीच व्यापार बढ़ाने की संभावना के साथ चिह्नित निर्यात समूहों के निर्यात के विस्तार के लिए ऋण-व्यवस्था उपलब्ध कराई जाती है।

घरेलू परामर्श सेवाओं के विकास पर सेमिनार

एशियाई विकास बैंक (ए. वि. बैं.) निधीयित परियोजनाओं में भारतीय परामर्श फर्मों द्वारा बढ़ती हुई प्रभावी प्रतिभागिता की संभावना को देखते हुए एक्ज़िम बैंक के साथ ए. वि. बैं. और परामर्श विकास सेवाओं के विकास पर एक सेमिनार आयोजित किया गया। इस दो दिवसीय सेमिनार का मुख्य फ़ोकस ए. वि. बैं. द्वारा निधीयित परियोजनाओं में भारतीय परामर्शकों के अवसरों की जागरुकता (व्यष्टियों और फर्मों) में सुधार करना तथा उन्हें सभी पहलुओं पर गहरी समझ उपलब्ध कराना है जो व्यवसाय प्राप्त करने के लिए उपयोगी हो। एशियाई विकास बैंक के दल में श्री हुआंग पिन गुओ, प्रधान परामर्श सेवा विशेषज्ञ और श्री पैट्रिक आर लिजोट, वरिष्ठ प्रापण विशेषज्ञ थे। व्यवसाय अवसरों के स्वरूप, प्रापण नीतियों तथा एशियाई विकास बैंक के दिशा निर्देश और ए. वि. बैं. निधीयित परियोजनाओं में प्रभावी प्रतिभागिता पर सेमिनार में फ़ोकस किया गया। इस सेमिनार से भारतीय कंपनियों को ए. वि. बैं. के अधिकारियों से प्रत्यक्ष बातचीत करने का मंच उपलब्ध हुआ।

विविध निधीयित एजेंसियों द्वारा निधीयित परियोजनाएं जैसे ए. वि. बैं. ने आपूर्तिकारों, संविदाकारों और परामर्शकों को आकर्षक व्यवसाय अवसर प्रस्तुत किये। भारतीय निर्यात-आयात बैंक विविध एजेंसियों वित्तीय संस्थाओं, व्यापार संवर्धन एजेंसियों एवं सेवा उपलब्धकर्त्ताओं के साथ अपने वित्तपोषण कार्यक्रमों को पूरा करने के लिए अनेक सेवाओं का प्रस्ताव करता है। ऐसे सेमिनार भारतीय कंपनियों के वैश्वीकरण प्रयासों को सक्रिय रूप से समर्थन के एक्ज़िम बैंक के उद्देश्य के अनुरूप है। विविध निधीयित परियोजनाओं द्वारा परियोजना संबंधी अनेक सूचना, सलाहकारी और समर्थन सेवाएं उपलब्ध कराकर एक्ज़िम बैंक भारतीय कंपनियों द्वारा प्रभावी प्रतिभागिता बढ़ाने के लिए सक्रिय कार्यक्रम परिचालित करता है।

एक्ज़िमिअस केन्द्र का स्तम्भ

वर्ष 2003 की पहली तिमाही में केन्द्र ने निम्न कार्यक्रम आयोजित किए -

- एक्जिमिअस केन्द्र बैंगलोर में ' बौद्धिक संपत्ति मुद्दे : फार्मास्यूटिकल्स जैव प्रौद्योगिकी तथा सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र ' पर कार्यशाला हुई श्री डी केलब गैब्रिअल पार्टनर तथा श्री जे अभयान, अटार्नी, कुमारन एण्ड सागर नई दिल्ली में स्थित संपूर्ण सेवा की बैद्धिक संपत्ति नियम फर्म जिसकी शाखा बैंगलोर में है ने सेमिनार को संबोधित किया। ' एक्ज़िम बैंक की भूमिका और सेवाओं ' पर कार्यशाला में केन्द्र में एक प्रस्तुति की जिसमें 26 प्रतिभागियों ने भाग लिया।
- एक्ज़िमिअस केन्द्र में ' टर्नअराउंड स्टॅट्रजीज मर्जर/एक्विजीन्स' पर एक सेमिनार आयोजित किया गया। यू बी समूह के वरिष्ठ कंपनी उपाध्यक्ष ने समाहित करने तथा अधिग्रहण के महत्त्व पर प्रकाश डाला। श्री एस कृष्णास्वामी, एस कृष्णास्वामी एण्ड कं. सनदी लेखाकार ने व्यवसाय मूल्यांकन पर चर्चा की और राजेन्द्र राव एण्ड एसोसिएट्स राजेंद्र राव ने लेखांकन पहलू पर अपने विचार व्यक्त किये। केन्द्र ने एक्ज़िम बैंक की भूमिका और सेवाओं पर एक प्रस्तुति की जिसमें 16 प्रतिभागियों ने भाग लिया।
- नोएडा में ' राज्यस्तरीय व्यापार संवर्धन एजेंसियों की क्षमताओं को बढ़ाना ' विषय पर एक कार्यशाला आयोजित की गई। यह कार्यशाला छोटे एवं मध्यम आकार उद्यमों के विश्व संघ तथा एक्ज़िम बैंक द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित की गयी। इस कार्यशाला का उद्घाटन श्री एस के टुटेजा, सचिव लघु उद्योग भारत सरकार ने किया। फिलिप. ए. डब्ल्यू विलियम्स, वरिष्ठ सलाहकार, अंतरराष्ट्रीय व्यापार केन्द्र (अं. व्या.के.) जीनेवा ने व्यापार संवर्धन के संस्थागत पहलुओं पर प्रस्तुतियाँ प्रस्तुत कीं। श्री अमीरम बुक्शपैन, परामर्शदाता, इज़रायल निर्यात एवं अंतरराष्ट्रीय सहयोग संस्थान ने भी प्रस्तुत की।

  डा. जे एस जुनेजा, कार्यशाला निदेशक ने प्रमुख संबोधन किया। इस कार्यशाला में 21 प्रतिभागी थे जो राज्य उद्योग निदेशालयों, व्यापार संवर्धन संगठनों तथा दिल्ली, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, राजस्थान, उत्तरांचल और उत्तर प्रदेश के वरिष्ठ अधिकारी थे।
- केन्द्र में इसी तरह की एक और कार्यशाला डब्ल्यू ए एस एम ई और एक्ज़िम बैंक द्वारा संयुक्त रूप से की गई। इस कार्यशाला का उद्घाटन श्री आर रोशन बेग माननीय मंत्री लघु उद्योग एवं हज, कर्नाटक सरकार ने किया। श्री फिलिप ए. डब्ल्यू. विलियम्स व्यापार संवर्धन के संस्थागत पहलुओं पर वरिष्ठ सलाहकार, अंतरराष्ट्रीय व्यापार केन्द्र (अं व्या के), जीनेवा और अमीरम बुक्शपैन परामर्शदाता, इजरायल निर्यात एण्ड अंतरराष्ट्रीय सहयोग संस्थान की प्रस्तुतियाँ प्रमुख थीं। केन्द्र ने जून 2003 में निम्नलिखित कार्यक्रम भी संचलित किये :-

  ★ खाद्य उत्पादों के निर्यात के लिए गुणवत्ता मानक

  ★ भारत की वस्त्र निर्यात रणनीति

  केन्द्र अपनी भावी कार्यसूची पर सुझाव आमंत्रित करता है।

एक्जिमिअस केन्द्र के भावी कार्यक्रमों के विवरण के लिए सुश्री आर. रूपा से बैंगलोर में टेली (080) 5589106 पर सम्पर्क करें।
ई-मेल : eximius@giasbg01.vsnl.net.in

पुस्तक समीक्षा

बिल्डिंग कॉम्पीटिटिव फर्म्स-इंसेटिव्स एण्ड केपॅबिलिटीज-वर्ल्ड बैंक

इस पुस्तक में एक ऐसा ढांचा दिया गया है जो प्रतिस्पर्धी फर्मों और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं के लिए आवश्यक आर्थिक और नीतिगत प्रोत्साहन पर बल देता है। इसमें फर्मों की प्रमुख क्षमताओं का वर्णन भी किया गया है जिसे फर्म अधिक प्रतिस्पर्धी बनने के लिए फर्म के अंतर्गत ही विकसित करती है। ढांचे में महत्त्वपूर्ण नीतिगत मुद्दों के बीच सेतु उपलब्ध कराया गया है जैसे कंपनी प्रशासन, विदेशी प्रत्यक्ष निवेश, उन्नयन की तैयारी, बौद्धिक संपत्ति अधिकार, ई-वाणिज्य, कौशल प्रशिक्षण तथा आपूर्ति शृंखला प्रबंधन।

पुस्तक के अनुसार आज की वैश्विक अर्थव्यवस्था में फर्मों को अत्यधिक प्रतिस्पर्धी व्यापार और उत्पादन वातावरण का मुकाबला करने के लिए सतर्कता अपेक्षित होती है। अतएव प्रतिस्पर्धात्मकता एक बहुत बड़ी राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और स्थानीय सरकारों की विश्वव्यापी पूर्व व्यवसाय अपेक्षा है क्योंकि वे अपने कार्यक्षेत्र में निवेश वातावरण सुदृढ़ करना चाहती हैं। ऐसी मान्यता बढ़ती जा रही है कि प्रतिस्पर्धात्मकता के लिए उदार व्यापार वातावरण अधिक अपेक्षित होता है जो घरेलू नीतियाँ एवं संस्थाएं, तथाकथित सरहद के पार जैसे मुद्दे उन देशों के लिए नाज़ुक हैं जो व्यापार के उदारीकरण का पूरा लाभ उठाना चाहते हैं। जहाँ फर्म स्तर की प्रतिस्पर्धात्मकता व्यापक एवं सूक्ष्म आर्थिक कारकों के मेज़बानों द्वारा प्रभावित होती है लेकिन इस पुस्तक में सूक्ष्म स्तर के निर्धारकों पर ध्यान केंद्रित किया गया है। यहाँ प्रस्तुत आलेख में इस बात पर बल दिया गया है कि जहाँ व्यष्टि फर्मों को प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने मे आगे आना चाहिए वहीं सार्वजनिक नीति की भूमिका भी प्रमुख होनी चाहिए। सरकारी नीतियों से अत्यधिक उत्पादकता लाभ का कंपनी प्रबंधन का प्रयास होता है जिससे बाज़ार की विफलताएं और सूचना अव्यवस्था संबोधित होती है। पुस्तक में निजी प्रयास और सार्वजनिक नीतियों के बीच के उदाहरण दिए गए हैं।

देशों का सूक्ष्म अवलोकन

बांग्लादेश

वास्तविक स.दे.उ. वृद्धि 2003 में 4.9% की गई जो 2002 से 4.2% अधिक है। इससे

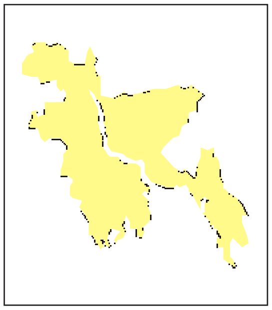

वाणिज्यिक निर्यातों और कृषि उत्पादन में वृद्धि प्रतिबिंबित होती है। विश्व बैंक और अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष बांग्लादेश को निदेश दिया है कि वह निजीकरण की प्रक्रिया में शीघ्रता करे ताकि बजट घाटा पूरा किया जा सके तथा स्वतंत्र प्रवाही मुद्रा की ओर स्थानांतरण हो जिससे गरीबी कटौती वृद्धि सुविधा (पी आर जी एफ) के अंतर्गत 1.8 बिलियन अमेरिकी डॉलर का ऋण मिल सके। सिले-सिलाए वस्त्रों के क्षेत्र में प्रत्येक विदेशी निवेश की अनुमति दी जाएगी बशर्ते निवेशक देश के भीतर कम से कम एक आपूर्तिकार सेतु स्थापित करें। बैंकिंग सुधार पारित किए गए हैं जिनका उद्देश्य बृहत्तर स्वायत्तता, पारदर्शिता तथा जबाबदेही है। यू. के. और नीदरलैण्ड वित्तीय प्रबंधन सुधार कार्यक्रम के कार्यान्वयन के लिए 37 मिलियन अमेरिकी डॉलर का ऋण उपलब्ध कराया है। स्वीडन ने एच आइ वी। एड्स की रोकथाम परियोजना के लिए 1.5 मिलियन अमेरिकी डॉलर मंजूर किया है।

पेरू

सामान्य रूप से लैटिन अमेरिकी क्षेत्र के मंद आर्थिक वातावरण और विशेष रूप से अपनी खुद की चार वर्षों की अपेक्षाकृत धीमी वृद्धि के बाद पेरू ने 2002 में 5.2% की तीव्र अनुमानित वृद्धि हासिल की है। खनन, कृषि और निर्माण क्षेत्रों से सबसे अधिक वृद्धि हुई। इस बड़े समुदाय के सदस्य सोने, तांबे और जस्ते के प्रमुख निर्यातक हैं तथा

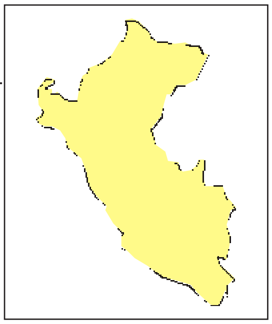

समुद्री उत्पादों के लिए सफल रहा है तथा स्थिर विनियम दर बनाए रखी है। पत्तनों की हाल की प्रतिस्पर्धात्मकता को सुधारने के प्रयास तथा अक्तूबर 2002 के बड़े व्यापार संवर्धन और ड्रग उन्मूलन अधिनियम से लाभान्वित होकर पेरू के निर्यातों में 2003 में 16% वृद्धि होने की संभावना है। प्रारंभिक रूप से अमेरिका और लैक क्षेत्र से किए जाने वाले आयातों में भी 14% की वृद्धि होने की आशा है। पेरू का भारित औसत प्रशुल्क स्तर 12.9% है। इसके उदार विदेशी प्रशासन में खनन, दूर संचार और ऊर्जा क्षेत्रों में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश बढ़ा है। निवेश संवर्धन, राजकोषीय समेलन, आधुनिकीकरण और सार्वजनिक ऋण प्रबंधन पर फ़ोकस केन्द्रित करते हुए हाल ही में की गई पहलों के परिप्रेक्ष्य में सुदृढ़ वृद्धि बने रहने की आशा है।

मोज़ाम्बिक

मोज़ाल अल्यूमिनियम स्मेल्टर और दक्षिण अफ़्रीका में गैस निर्यात पाइपलाइन निर्माण सहित बड़े पैमाने के निवेश के कारण 2003 में वास्तविक स.दे.उ. वृद्धि दर 9% तक होने की आशा है। अपनी मैद्रिक और राजकोषीय नीतियों को कड़ा करने की सरकारी पहल से तथा 2003 में मुद्रा

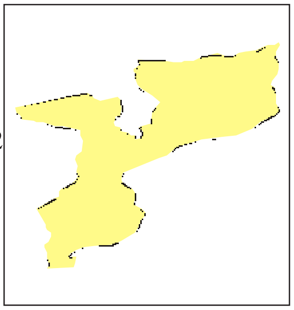

स्थिरता प्राप्त करने से औसत उपभोक्ता मूल्य मुद्रास्फीति 2002 में 15.2% से घटकर 7% हो गई है। उप सहारा अफ़्रीका में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के लिए मोज़ाम्बिक सबसे अधिक लोकप्रिय गंतव्यों में से एक रहा है। विश्व निवेश रिपोर्ट, 2002 के अनुसार मोज़ाम्बिक में (2000 में 139 मिलियन अमेरिकी डॉलर की तुलना में) 2001 में 481 मिलियन अमेरिकी डॉलर के प्रत्यक्ष विदेशी निवेश हुए जो उप सहारा अफ़्रीका में चौथे स्थान पर था। यह वृद्धि मोज़ल अल्यूमिनियम स्मेल्टर निर्माण के कारण हुई।

यूक्रेन

2002 के अंतिम दो महीनों में यूरो बांड में 400 मिलियन अमेरिकी डॉलर लगाने के बाद 2003 में सरकार की दूसरे 600 मिलियन अमेरिकी डॉलर के निवेश की योजना से यूक्रेन में वाणिज्यिक पूँजी के निवेश की योजना से यूक्रेन में अधिकांश निजी क्षेत्रों के लिए बाहरी पूँजी के अत्यधिक प्रतिबंधित पहुँच के बावजूद दो प्रमुख दूर संचार उपलब्धकर्त्ताओं में से एक किवस्टार ने नवंबर

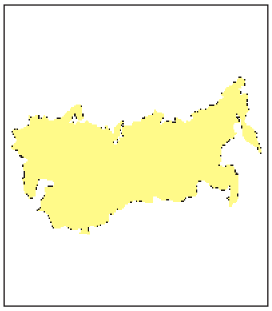

2002 में 100 मि. अ. डॉ. सफलता दूसरा निवेश मार्च 2003 में किया। 2003-04 में अत्यधिक ऋण के बावजूद यूक्रेन की अपेक्षाकृत सुदृढ़ वास्तविक स.दे.उ. वृद्धि और अमेरिकी डॉलर के विरुद्ध मामूली मुद्रा स्थिरता कुल विदेशी ऋण स्टॉक स.दे.उ. अनुपात में किसी प्रकार की वृद्धि नहीं कर पाया तथा 2004 के अंत तक 25% से कम होने की संभावना है। विश्व व्यापार संगठन की सुलभता सरकार का प्रमुख व्यापार नीति उद्देश्य रहा है।

भूमध्य गीनिया

1990 में तेल और गैस के भण्डार बड़ी मात्रा में खोज से सहायता पर निर्भर भूमध्य गीनिया को अफ़्रीका की सबसे तेज़ी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में परिवर्तित कर दिया और यह महाद्वीप का निवेश का प्रमुख गंतव्य बन गया। यहाँ पर 740,000 बैरल तेल भण्डार का अनुमान लगाया गया है तथा नए भण्डारों की खोज की जा रही है। अधिकांश तेल आयातक देश अपने तेल भण्डार के आयात पिटाई को भूमध्य गोयना और अन्य पश्चिमी अफ़्रीकी देशों में फैलाने की कोशिश कर रहे हैं तथा खाड़ी के तेल पर अपनी निर्माता कम करना चाह रहे हैं। तेल क्षेत्र ने 2001 में स. दे. उ. का 90% का योगदान किया जबकि एक दशक पूर्व इसका कोई योगदान नहीं था। 2002 में वास्तविक स. दे. उ. अनुमानतः 23.8% बढ़ा

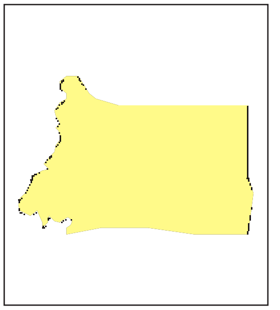

और इस देश ने अफ़्रीका में प्रति व्यक्ति सबसे अधिक स.दे.उ. की प्रतिष्ठा प्राप्त की (2002 में 5144 अ.डा. अनुमानित) लेकिन कृषि की वृद्धि का क रहना जारी है तथा गरीबी व्यापक रूप से है।

चयनित मुद्राएं

यूरोप क्षेत्र

यूरो, आस्ट्रेलिया, बेल्जियम, फिनलैण्ड, फ्रांस, जर्मनी, आयरलैण्ड, इटली, लक्समबर्ग, नीदरलैण्ड, पुर्तगाल, स्पेन और ग्रीस की सामान्य मुद्रा है। यूरो 1 जनवरी 1999 से शुरू की गयी थी तथा 1 ई यू आर = 1.1796 अमेरिकी डॉलर के बराबर लाया गया तथा प्रतिभागी मुद्राओं का विनिमय दर यूरो के विरुद्ध अप्रतिसंहरणीय

ई यू आर/यू एस डालर: सितम्बर 1998 - जून 2003

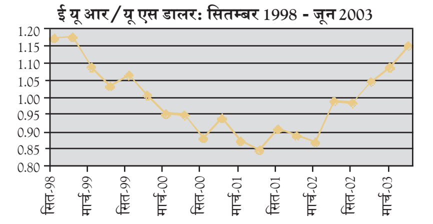

आधार पर निर्धारित कर दिए गए। 1 जनवरी, 2002 से सदस्य राज्यों ने यूरो बैंक नोट और सिक्के शुरू किए अपनी शुरुआत से ही यूरो अमेरिकी डॉलर के विरुद्ध गिर रहा है जो जून 2001 में 0.85 तक पहुँच गया तथा दिसंबर 2002 तक यह प्रारंभिक रूप से यूरो क्षेत्र की तुलना में अमेरिकी अर्थव्यवस्था की अपेक्षाकृत सुदृढ़ता के कारण था। लेकिन दिसंबर 2002 से प्रवृत्ति में बढ़ोत्तरी हुई जो मार्च, 2003 तक 1.09 अमेरिकी डॉलर प्रति ई यू आर हो गयी। ई यू आर का विनिमय दर संचलन ग्राफ में दिखाया गया है। 2002 की अंतिम तिमाही में यूरो क्षेत्र में ई यू आर का सुदृढ़ीकरण 1.30% की स.दे.उ. में वृद्धि के कारण हुआ है जो वर्ष 2003 में जारी रहने की आशा है। 2002 की अंतिम तिमाही में यूरो क्षेत्र का व्यापार संतुलन 26.57 बिलियन ई यू आर रिकार्ड किया गया। 2002 में मुद्रास्फीति की औसत दर 2.1 प्रतिशत थी जो 2001 के 2.6% औसत दर से बहुत कम थी। 2003 के पहले पांच महीनों में मुद्रास्फीति 2% के आसपास थी। उपर्युक्त कारकों के कारण अमेरिकी डॉलर की तुलना में यूरो बढ़ते रहे। यूरो की अत्यधिक वृद्धि अमेरिकी डॉलर के प्रति निवेशकों का नरम रुख भी रहा है। 5 जून, 2003 को 2.5% से 2.00% बी पी एस तक यूरोपीयन सेंट्रल बैंक द्वारा दर कटौती से विनियम दर 1 ई यू आर = 1.1841 अमेरिकी डॉलर छू गयी और तब से 23 जून, 2003 को 1.1540 पर आया तथा 2003 के आने वाले महीनों में इसके सुदृढ़ होने की आशा है।

दक्षिण अफ्रीका

2003 की पहली छमाही में दक्षिण अफ्रीकी रैण्ड 1995-2001 के बीच जेड ए आर 1995 में 3.60 से दिसंबर 2001 में 13.85 प्रति अमेरिकी डॉलर 13.85 प्रति अमेरिकी डॉलर हो गया जो 47% औसत वार्षिक दर से 6 वर्षों में 285% गिरावट दर्शाता है। 2002 के दौरान जेड ए आर, मार्च 2002 में 11.90 से 31 दिसंबर 2002 को 8.57 तक मज़बूत हुआ। मार्च 1995 से जेड ए आर स्वतंत्र रूप से परिवर्तनीय है। 2001 में ज़िम्बाब्वे में आए संकट से क्षेत्र में अस्थिरता आई है तथा जेड ए आर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है जिससे उस वर्ष में लगभग 37% की गिरावट आई है। लेकिन वर्ष 2002 के दौरान स.दे.उ. में 3% की वृद्धि हुई है और विदेशी मुद्रा भंडार की स्थिति संतोषजनक है जो लगभग 20 सप्ताहों के आयातों को कवर करेगा। मार्च, 2003 में मुद्रास्फीति 11.2% थी जो दिसंबर 2002 में अभिभावी 14.40% से बहुत कम था। इसके चालू वर्ष में और गिरने की संभावना है। 23 जून, 2003 को रैण्ड प्रति अमेरिकी डॉलर 7.93 था और चालू वर्ष में इसके प्रति अमेरिकी डॉलर 7.50 से 8.50 की रेंज में बढ़ने की आशा थी।

ब्राज़ील

18 जनवरी, 1999 से ब्राज़ील की मुद्रा ब्राज़ीलियाई रीअल अमेरिकी डॉलर की तुलना में स्वतंत्र रूप से प्रवाहित है। पिछले 7 वर्षों में बी आर एल अमेरिकी डॉलर की तुलना में धीरे-धीरे घट रही है जो 1996 में 1.039 से 2002 में 3.23 हो गई जो 34% वार्षिक औसत दर से 240% की कमी दर्शाता है। ब्राज़ील की समस्या 2001 और 2002 में उच्चतर चालू खाता घाटे के कारण मुख्य रूप से हुई। 2000 में अर्जेंटीना मे वित्तीय गड़बड़ी से ब्राज़ील की समस्या बी आर एल पर अटकलों के आक्रमण से शुरू हुई जो अगस्त 2002 के पहले सप्ताह में अंतरराष्ट्रीय मुद्रा काष द्वारा 30 बिलियन अमेरिकी डॉलर का ऋण लेना पड़ा। विदेशी मुद्रा भण्डार स्तर (सोने को छोड़कर) सितंबर 2001 में 39.91 बिलियन अमेरिकी डॉलर से घटकर अप्रैल में 32.87 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया जो वर्ष के अंत में 37.68 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक सुधरने के पहले पिछले 6 वर्षों में रिकार्ड गिरावट थी। अगस्त 2002 में ब्राज़ील का शुद्ध सार्वजनिक ऋण 288 बिलियन अमेरिकी डॉलर था जो ब्राज़ील के स.दे. उ. दो तिहाई था और 1994 से 30% अधिक था। परिणामस्वरूप वी आर एल के विनिमय दर में 31 दिसंबर 2001 के 2.3 से 31 दिसंबर, 2002 तक 3.53 की कमी हुई जो पिछले वर्ष में लगभग 53% कम हुआ।

मुद्रास्फीति को स्थिर करने की केन्द्रीय बैंक की पहलों के साथ उचित दिशा में ढांचागत सुधारों द्वारा अं मु को कार्यक्रम के प्रति सरकार की बचनबद्धता से ब्राज़ील की अर्थव्यवस्था ने आत्मविश्वास ह्रदयंगम किया है। यह 2003 की पहली छमाही में पूंजी के स्थिर अंतर्प्रवाह से प्रतिबिंबित होता है जिससे बी आर एल सुदृढ़ हुई है। जून के तीसरे सप्ताह में ऋण दर रातों रात 26.5% से घटकर 26% कर दी गई तथा बढ़ती मुद्रास्फीति को कम करने के लिए इसमें और कटौती होने की आशा है। तथापि ब्राज़ील के विदेशी ऋण वापस करने के परिप्रेक्ष्य में बी आर एल नाजुक रहा। 23 जून, 2003 को बी आर एल प्रति अमेरिकी डॉलर 2.89 कोट किया गया तथा चालू वर्ष में इसके रेंज बद्ध रहने की आशा है।

युद्ध के बाद इराक में व्यवसाय के अवसर

हाल के प्रशासन में परिवर्तन से होने वाली घटनाओं ने इराक में विशाल व्यवसाय अवसर खोल दिए हैं। भारत के परियोजना विशेषज्ञों ने इराक में कार्य करते हुए विशिष्ट अनुभव हासिल किए हैं। इराक के पुनर्निर्माण के प्रयास का क्षेत्रीय फ़ोकस देश के विशाल पेट्रोल भण्डार से प्रशासित है। यह इसकी बुनियादी सुविधाओं पर अनेक वर्षों के युद्ध और आर्थिक प्रतिबंध से भी प्रभावित हुआ है। प्रमुख क्षेत्र जहाँ पुनर्निर्माण परियोजनाओं के रूप में विशिष्ट निवेश अपेक्षित हैं उन्हें नीचे दिया जा रहा है -

❖ **पेट्रोलियम :** इराक के तेल भण्डार का पूर्ण रूपेण दोहन नहीं किया जा सका है। अब तक 73 में से केवल 15 क्षेत्रों को ही विकसित किया जा सका है। अतएव निम्न क्षेत्रों में व्यवसाय के अनेक अवसर मौजूद हैं - तेल क्षेत्र का पता लगाना तथा उसका प्रबंधन, पाइपलाइन निर्माण और परिचालन, पंपिंग स्टेशन, भण्डारण और टैंक फार्म्स, युद्ध की क्षति से मरम्मत तथा शिपिंग टर्मिनल का उन्नयन जहाँ टैंकर लोड किए जा सकें तथा सड़क और रेल संबंधों के रूप में संबंधित बुनियादी सुविधा, मज़दूरों के लिए आवास,स्वास्थ्य और शिक्षा सुविधाएं। तेल की बुनियादी सुविधा की मरम्मत के लिए हैलिबर्टन के लोग ब्राउन एण्ड रूट यूनिट को एक संविदा दी गई है।

❖ **परिवहन की बुनियादी सुविधा :** युद्ध में इराक के दो अंतरराष्ट्रीय विमान पत्तन बगदाद और बसरा नष्ट हो गए है। इनमें आधुनिकीकरण और सिविल पुनर्निर्माण की आवश्यकता है। प्रमुख समुद्री बंदरगाह उम कासर और बसरा हैं ये दोनों युद्ध में नष्ट हो गए हैं। उम कासर बंदरगाह के प्रबंधन के लिए अमेरिका को स्टीवेडरिंग सर्विसेस को 4.8 मिलियन अमेरिकी डॉलर की एक संविदा दी गई है। मौजूदा रेल लाइनों के अनुरक्षण और परिचालन तथा विस्तार से इराकी रेलवे प्रणाली ने और अवसर भी प्रदान किए हैं।

❖ **अन्य बुनियादी सुविधाएं :** जैसे बिजली, दूर संचार, जल :

- **बिजली :** इराक में बिजली की मांग 6.6 गिरावट है जबकि बिजली की आपूर्ति मात्र 4.4 गिरावट है जो बिजली निर्माण की उच्च मांग, जेनरेटरों, सब स्टेशनों, ट्रांसमिशन लाइनों सहित ट्रांसमिशन और वितरण की और संकेत करता है।
- **जल :** युद्ध की क्षति से इराक में जल और स्वास्थ्य नेटवर्क गंभीर रूप से छिन्न भिन्न हो गया है। प्रतिबंधों के कारण कल पुर्जों की कमी से नहीं हो पाया है। इस क्षेत्र में विशिष्ट सिविल कार्य और परामर्श कार्य अपेक्षित हैं।
- **दूरसंचार :** इराक में लैंडलाइन नेटवर्क बुरी तरह क्षतिग्रस्त हुआ है। लैंडलाइन्स (स्विचों और एक्सचेजों सहित) तथा मोबाइल सेल्यूलर प्रणालियों में विशेष रूप से निवेश किया जाना अपेक्षित है।

❖ **कृषि :** प्रतिबंधों के कारण कृषि क्षेत्र और सिंचाई प्रबंधन में विशेष निवेश की वृद्धि रुक सी गई है। युद्ध स्तर के पहले के स्तर के पहले के स्तर तक उपज बढ़ाने के लिए सिंचाई की सुविधा उपलब्ध कराना आवश्यक है।

❖ **निजीकरण :** सरकारी स्वामित्व की इराकी कंपनियों के निजीकरण की चलने की आशा है। अतएव भारतीय कंपनियों को अधिग्रहित करने या उनकी रुचि के रणनीतिक क्षेत्रों में संयुक्त उद्यम लगाने के लिए उनको अच्छा अवसर है।

भारतीय कंपनियाँ जिन तीन प्रमुख क्षेत्रों में व्यवसाय प्राप्त कर सकती हैं वे निम्न हैं -

❖ **प्रथम चरण :** इस समय अमेरिकी अंतरराष्ट्रीय विकास एजेंसी (यू एस ए आइ डी) तथा अमेरिकी रक्षा विकास के तत्वावधान में परियोजना निवेश किए जा रहे हैं भारतीय कंपनियाँ अमेरिकी कंपनियों के उप संविदाकारों के रूप में संविदाएं प्राप्त कर सकती हैं।

❖ **सामान्य व्यापार :**भारतीय कंपनियों को खाद्य पदार्थों (चाय, फल, अनाज), उपभोक्ता वस्तुएं कपड़े, माध्यमिक वस्तुओं तथा औद्योगिक वस्तुओं जैसे अनेक क्षेत्रों में व्यवसाय मिल सकते हैं।

❖ **विविध एजेंसी वित्तपोषित परियोजनाएं :** विश्व बैंक समूह यथा समय इराक में पुनर्निर्माण कार्य का समर्थन करना शुरू कर देगा। अपने गठन के स्वरूप के चलते विश्व बैंक किसी मान्यता प्राप्त राष्ट्रीय सरकार की अनुपस्थिति में वित्तपोषण की वचनबद्धता नहीं दे सकता जिससे परियोजनाओं के अनुमोदन में बिलंब होगा। एक बार इस वैधानिक बाधा के समाप्त हो जाने पर भारतीय कंपनियों के लिए अनेक व्यवसाय अवसर होंगे।

इसमें प्रकाशित समाचार और जानकारी ऐसे विभिन्न स्रोतों / माध्यमों से एकत्रित की गयी हैं जो कि अपने आप में प्रामाणिक हैं । प्रकाशित सामग्री की प्रामाणिकता को बनाए रखने में पूरी सावधानी बरती गयी है फिर भी इस प्रकार की जानकारी की प्रामाणिकता और यथार्थता की कोई ज़िम्मेदारी एक्ज़िम बैंक की नहीं हैं ।

नोट : भारतीय रुपये का उल्लेख करोड़ और लाख में किया गया है -
1 करोड़ : 10 मिलियन
1 लाख : 100 हज़ार

भारतीय निर्यात-आयात बैंक, केंद्र एक भवन,
21वीं मंज़िल, विश्व व्यापार केंद्र संकुल,
कफ़ परेड, मुंबई - 400 005.
दूरभाष : 2218 5272 फैक्स : 2218 2572
ई-मेल : eximcord@vsnl.com

संपर्क नंबर : अहमदाबाद : 657 6852, बैंगलोर : 558 5755, चेन्नै : 2522 4714, गुवाहाटी : 259 9135, हैदराबाद : 2330 7816, कोलकाता : 2229 3416, मुंबई : 2283 0761, नयी दिल्ली : 2332 6625, पुणे : 645 8599
बुडापेस्ट : (361) 338 2833, जोहॉनिस्बर्ग : (2711) 442 8010, मिलान : (3902) 5843 0546, सिंगापुर : (65) 6532 6464, वाशिंग्टन डी. सी. : (202) 223 - 3238